मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 डाक पंजीकरण संख्या : UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ नवम्बर : २०२१, विक्रमी सम्वत् : २०७८
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२२, दयानन्दाब्द : १९८ अंक : ७७

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

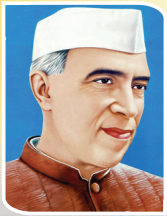

पं. जवाहर लाल नेहरू
(जन्म दिवस : 14 नव.)

महात्मा हंसराज
(स्मृति दिवस : 15 नव.)

लाल लाजपत राय
बलिदान दिवस : 17 नव.)

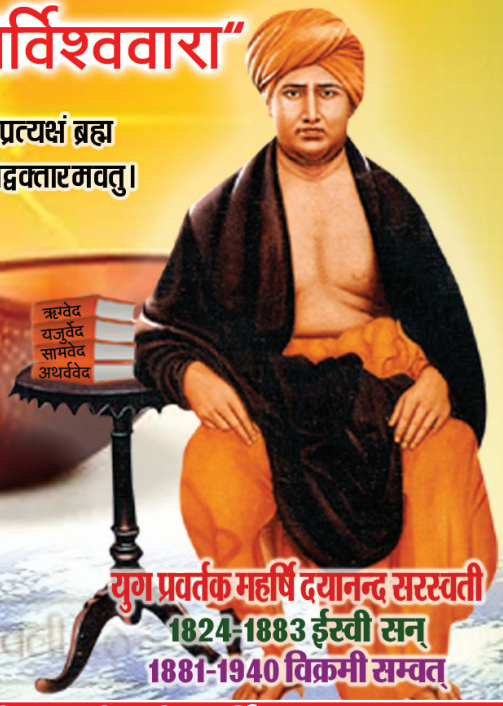

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

आप सभी देशवासियों को ज्योति पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक, ऋषि दयानन्द महिमा के गीतों को लिखने वाले ऋषि भक्त पं. सत्यपाल 'पथिक' जी की प्रथम पुण्यतिथि 17 अक्टूबर को जालंधर (पंजाब) में भव्यरूप से मनाई गई। यज्ञ भजन के कार्यक्रम के पश्चात पुस्तकों का विमोचन किया गया। श्रद्धांजलि समारोह के पश्चात अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अनेक विद्वान, भजनोपदेशक, आर्यनेता, आर्यों समाजों के दूर-दूर से पधारे अधिकारियों की उपस्थिति बड़ी संख्या में रही। कार्यक्रम का प्रसारण आर्य संदेश टीवी पर किया गया। आर्य समाज नोएडा की ओर से मंत्राणी श्रीमती गायत्री मीना, श्रीमती राज सरदाना, श्रीमती राज अग्रवाल, वसराजपुरी व गुरुकुल के प्रधानाचार्य आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार ने उपस्थिति दर्ज कराई और पथिक जी को अपनी रचनाओं से भावभीनी श्रद्धांजलि प्रदान की। कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री शैलेन जगिया

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	4
2.	अच्छे संस्कारों की जरूरत....	5
3.	महर्षि दयानन्द और दीपावली....	6–7
4.	सत्य सनातन वैदिक धर्म....	8–9
5.	ऋषि दयानन्द न आये होते तो हम....	10–11
6.	संध्या आदि पंच सकारों के उद्घोषक....	12
7.	दीपावली (संस्कृत)	13
8.	महापुरुषों को नमन...	14–15
9.	सुहागिनों का त्योहार करवा-चौथ...	17
10.	आर्यसमाज और भारतीय शिक्षा पद्धति	22
11.	समाचार-सूचनाएं....	24–25
12.	सुस्वास्थ्य : हेल्दी फूड भी हो सकते हैं....	26

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	10,000 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	7000 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	5000 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	2500 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	1500 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

अविद्या-अंधकार का घटाक्षेप चहुंओर था। भारत की दुर्दशा हो रही थी। ऋषि-मुनियों का देश जो कभी विश्वगुरु था, दुनिया को दिशा देता था, विश्व का मार्गदर्शक था। वही महान भारत अपने गौरव, अपने अतीत गरिमा पतन के गर्त में पड़ा हुआ था। भारत के नागरिक छुआछूत जैसी बीमारियों से ग्रस्त थे। दुनिया को 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते' अर्थात् हम सब एक साथ चले, एक साथ बोले, हमारे मन एक हो, प्राचीन समय में देवताओं का ऐसा आचरण रहा इसी कारण वे वंदनीय है। वेदोपदेश करने वाला भारत स्वयं अनेक जातियों में बंटा हुआ था।

परिस्थितियां ऐसी कि कोई छोटी जाति का व्यक्ति अगर उच्च जाति के व्यक्ति के सामने से भी गुजर जाये तो उसको सजा मिलती थी तथा वह तथाकथित व्यक्ति स्नान करता था। मानवता भारत वर्ष में शर्मसार हो रही थी। प्यास से तड़पते व्यक्ति को कुलीन व्यक्ति अपने कुएं से जल तक नहीं लेने देते थे। ज्ञान-विज्ञान, चिंतकों-मनीषियों से भरी भूमि अज्ञानियों, अंधविश्वासी तथा मूर्खों से भरी हुई थी।

जिस देश में लाखों वर्ष पूर्व मनु महाराज ने कहा था- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' उसमें स्त्रियों की दुर्दशा देख रोना आता था। पशुओं से भी ज्यादा अत्याचार स्त्रियों पर होते थे। उसी से पढ़ने-लिखने के सारे अधिकार छीन लिये गये थे। उनको केवल भोग की वस्तु समझा गया था। भारत वर्ष की दुर्दशा की कोई सीमा नहीं थी। मुट्ठी भर धूर्त अंग्रेजों ने देश को गुलाम बनाया हुआ था। चारों तरफ उनके अत्याचार से देश में त्राहिमाम-त्राहिमाम का शोर था।

ऐसे में ईश्वर कृपा हुई और ग्राम टंकारा में बालक मूलशंकर का जन्म हुआ। आगे चलकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुआ। गुरु विरजानन्द जी के चरणों में अथाह ज्ञान प्राप्त कर अखंड ब्रह्मचारी, महान मनीषी वेदज्ञ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने तर्कों से धार्मिक अंधविश्वास की धज्जियां उड़ा दीं। जातिवाद को कलंक सिद्ध किया तथा आर्य समाज स्थापना कर देश में रामप्रसाद विस्मिल, भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों की फौजें खड़ी कर दी और देश को आजाद कराने में सबसे बड़ी भूमिका निभायी। महर्षि देव दयानन्द को शत्-शत् नमन!!

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

वेदोपदेश करने वाला भारत स्वयं अनेक जातियों में बंटा हुआ था। परिस्थितियां ऐसी कि कोई छोटी जाति का व्यक्ति अगर उच्च जाति के व्यक्ति के सामने से भी गुजर जाये तो उसको सजा मिलती थी तथा वह तथाकथित व्यक्ति स्नान करता था। मानवता भारत वर्ष में शर्मसार हो रही थी। प्यास से तड़पते व्यक्ति को कुलीन व्यक्ति अपने कुएं से जल तक नहीं लेने देते थे। ज्ञान-विज्ञान, चिंतकों-मनीषियों से भरी भूमि अज्ञानियों, अंधविश्वासी तथा मूर्खों से भरी हुई थी। जिस देश में लाखों वर्ष पूर्व मनु महाराज ने कहा था- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' उसमें स्त्रियों की दुर्दशा देख रोना आता था। पशुओं से भी ज्यादा अत्याचार स्त्रियों पर होते थे। उसी से पढ़ने-लिखने के सारे अधिकार छीन लिये गये थे। उनको केवल भोग की वस्तु समझा गया था। भारत वर्ष की दुर्दशा की कोई सीमा नहीं थी। मुट्ठी भर धूर्त अंग्रेजों ने देश को गुलाम बनाया हुआ था। चारों तरफ उनके अत्याचार से देश में त्राहिमाम-त्राहिमाम का शोर था। ऐसे में ईश्वर कृपा हुई और ग्राम टंकारा में बालक मूलशंकर का जन्म हुआ। आगे चलकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुआ। गुरु विरजानन्द जी के चरणों में अथाह ज्ञान प्राप्त कर अखंड ब्रह्मचारी, महान मनीषी वेदज्ञ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने तर्कों से धार्मिक अंधविश्वास की धज्जियां उड़ा दीं। जातिवाद को कलंक सिद्ध किया तथा आर्य समाज स्थापना कर देश में रामप्रसाद विस्मिल, भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों की फौजें खड़ी कर दी और देश को आजाद कराने में सबसे बड़ी भूमिका निभायी। महर्षि देव दयानन्द को शत्-शत् नमन!!

अच्छे संस्कारों की जरूरत

आज भारत विकासशील देशों में गिना जाता है। परंतु खेद है कि साथ स्वीकार भी करना पड़ता है कि हमारा देश सामाजिक बुराइयों को लेकर एक शर्मनाक स्तर पर दिखाई देता है। नगरों और उपनगरों में शिक्षा के स्तर को 80 प्रतिशत मानकर हम गर्व करते हैं। गांवों में भले ही शिक्षा का स्तर कुछ कम हो, परंतु बुराइयों की ओर यदि रुख करें तो कन्याभ्रूण हत्या और ड्रग्स के नशे व शराब के सेवन से जकड़ी हुई हमारी सूझबूझ में बड़ी गिरावट दिखाई दे रही है।

पहले माना जाता था कि शिक्षा के अभाव में गांवों में सुधार की संभावनाएं कम है, परंतु वर्तमान में गांव हो या शहर हमारे मस्तक को शर्म से झुका देने वाले कृत्य देखने को मिलते हैं। जहां कन्या को घर-घर देवी की तरह पूजा जाता हो, उसी कन्या को जन्म से पहले ही मौत के घाट उतार दिया जाना क्या राक्षसी कृत्य से कुछ कम है? ऐसी सोच रखने वाले अपने पुत्र के लिए संस्कारित परिवार से वधू की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? खेद है कि फिर भी लोग भ्रूण हत्या के पाप में भागीदार बनने से नहीं चूक रहे हैं।

दूसरी ओर देखें तो 13-14 साल के किशोरों में ड्रग्स नशा, शराबखोरी की आदत ने परिवारों को झकझोर कर रख दिया है। अब तक बड़ी उम्र के लोगों में यह बुराई देखने को मिलती थीं, परंतु अब तो यह स्कूल स्तर से शुरू हो जाती है और अब तो इसे रहन-सहन के स्तर में गिना जाने लगा है। बड़े-बुजुर्ग भी इसे रोक पाने में सक्षम नहीं दिखाई देते। ऐसे परिवारों की कमी नहीं जिनमें इसी कारण मारपीट भी होती है और कहीं-कहीं तो इस आदत के पीछे कर्ज की मार भी झेलनी पड़ती है।

इन बुराइयों का देखते हुए सारे समाज को जागरूक होना पड़ेगा और एक अच्छे खासे आंदोलन का रूप देने के लिए जनता को तैयार करना होगा। आर्यसमाज इन बुराईयों के लिए सदा ही लड़ता रहा है।

विश्वगुरु कहे जाने वाले हमारे भारत का क्या हो गया यदि जान लें तो बेहतर होगा। विदेशी महिलाओं से भी छेड़छाड़, नाबालिग बच्चियों से बलात्कार और आये दिन होने वाले भ्रष्टाचार, घोटालों के समाचारों से हमारा हृदय तार-तार हो जाता है।

हमें सोचना होगा, गम्भीर ऑपरेशन की आवश्यकता है। हममें से हर किसी को बलिदानी चोला पहनना होगा ताकि स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान व्यर्थ न जाये। यदि जन्म से ही संस्कार बच्चों में डाले जाएं तो कई बुराइयों को कम किया जा सकता है। संस्कारों की आज बहुत कमी है, स्कूलों में संस्कार नहीं दिये जाते।

मर्यादापुरुषोत्तम राम, योगीराज कृष्ण, स्वामी दयानन्द, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, शहीद भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद व कई अन्य

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

संस्कार का तात्पर्य हृदय से शिष्ट आचरण करना सिखाना है। दिखावे या कृत्रिमता का संस्कार में तनिक भी स्थान नहीं है। बच्चों को अच्छे संस्कार अर्थात् माता-पिता को नमस्ते करना, सभी व्यक्तियों के साथ विनम्रता का व्यवहार करना, किसी की भावनाओं को ठेस न पहुंचाना, छोटे बड़े का लिहाज करना तथा हर तरह से मर्यादित आचरण करना इत्यादि बताएं।

महापुरुषों को बचपन से ही उनके माता-पिता द्वारा अच्छे संस्कार दिये जाने से ही वह उच्चकोटि के मानव बने व संसार के उपकार के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। मार्डन बनने की होड़ में हमने अपनी संस्कृति को खो दिया है, जिससे आज का युवा पथभ्रष्ट हो रहा है। बड़ों को सम्मान नहीं, विदेशी चकाचौंध में कुछ नजर नहीं आता, सिवाय फूहड़ डांस, नाच-गाने, नंगापन, विदेशी संस्कृति, शराब नशाखोरी से आज के युवा को सुधारने की आवश्यकता है, जो अच्छे संस्कारों से ही सुधर सकते हैं। जिन्हें आत्मा से ही माता-पिता द्वारा संतानों को दिए जाने की नितांत आवश्यकता है।

ज्योति पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा समस्त जनों को दीपावली के पुनीत पर्व पर हर प्रकार की सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति की कामना से परिपूर्ण बधाई व शुभकामनाएं। दीपावली के दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण समस्त आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग की सर्वोच्च प्रेरणा बने, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है। - **प्रबंध संपादक**

महर्षि दयानन्द और दीपावली

लेखक : डॉ. महेश विद्यालंकार, वैदिक प्रवक्ता

महापुरुषों की परम्परा में ऋषि दयानन्द की अलग पहचान और महत्व है। जैसे सभी पर्वतों में हिमालय की अलग विशेषता, आकर्षण तथा ऊंचाई है उसी प्रकार स्वामी दयानन्द का निराला व्यक्तित्व एवं कृतित्व था। अज्ञान, अंधकार, ढोंग, पाखंड आदि में डूबी मानव जाति के उद्धार के लिए और भारत माता के आंसू पोंछने के लिए वह निराला महापुरुष उनसठ वर्ष की अवधि के लिए संसार में आया था।

शिवरात्रि को आत्मबोध व सत्यबोध हुआ। फिर घर से सच्चे शिव एवं सत्य को पाने के लिए निकल पड़े तथा जीवन भर घर की ओर मुड़कर नहीं देखा। सम्पूर्ण जीवन देश, धर्म, संस्कृति, वेदोद्धार मानव उत्थान और कल्याण में लगा दिया, अपने लिए न कुछ चाहा, न मांगा, न संग्रह किया और न कोई चेला व चेली बनाई, न कोई मठ-मंदिर व गद्दी बनाई। ऋषि ने कोई धर्म, पंथ व नया सम्प्रदाय नहीं चलाया, वे सारा जीवन जहर पीते रहे, अपमान सहते रहे, गालियां और पत्थर खाते रहे तथा बदले में संसार को सीधा सच्चा एवं सरलमार्ग बताते रहे।

दीपावली से ऋषि दयानन्द के जीवन की अमर गाथा जुड़ी है। इसी दिन ऋषि ने अपना पंच भौतिक नश्वर शरीर छोड़ा था। एक दीप बुझा, किन्तु वे असंख्य लोगों को नवजीवन प्रकाश दे गए। ऐसा अद्भुत, विलक्षण, पुण्यात्मा, योगी, ऋषि, त्यागी, तपस्वी महापुरुष इतिहास में दुर्लभ है। यह दीपावली उन्हीं के उपकारों, योगदान और स्मृति का पर्व है। ऋषि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने तथा अश्रुपूरित होकर उन्हें नम्र श्रद्धांजलि देने का निर्वाणोत्सव है। वह युगपुरुष संसार में जो सत्य, धर्म व वेद की ज्योति जला गये है। वह युगों तक संसार को सन्मार्ग दिखाती रहेगी।

वे सत्य के शोधक, सत्यवक्ता, सत्यप्रचारक अंत में सत्य पर ही शहीद हो गए। उन्होंने गलत बातों के साथ कभी समझौता नहीं किया, यदि ढोंग, पाखंड, गुरुडम, पुजापे-चढ़ावे आदि के साथ समझौता किया होता तो वे उन्नीसवीं सदी के सबसे बड़े भगवान् होते, उनके कट्टर विरोधी भी अंदर से उनके प्रशंसक थे। स्वामी जी का जीवन मन-वचन तथा कर्म से एक जैसा था, उनके सम्पर्क में जो आया, जिसने उन्हें देखा, सुना एवं पढ़ा उसी का कायाकल्प हो गया न जाने कितने गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, हंसराज, अमीचन्द आदि के जीवन संत तथा परोपकारी बन गए।

इतना जबरदस्त चुम्बकीय आकर्षण एवं जादुई शक्ति और किसी महापुरुष में नजर नहीं आता है, लोग तलवार लेकर आए शिष्य बनकर गए, जिधर से निकले उधर ही ढोंग-अज्ञान, पाखंड मिटाते चले। वह सत्य का पुजारी, निर्भीक संन्यासी संसार में बुराईयों के विरुद्ध अकेले लड़ा, विजयी हुआ, उन्हें अनेक बार जहर दिया गया, वे बदले में जगत को अमृत देते रहे। गालियां देने वाले को फल व मिठाइयां भिजवाते थे, कई जगह पत्थरों की वर्षा हुई, वे इसे फूलों की वर्षा मानते थे, 'अपने विषदाता जगन्नाथ को प्राणदान दिया' दुनिया के इतिहास में ऐसा उदाहरण दूसरा न मिलेगा। विषदाता जगन्नाथ को क्षमाकर, रुपये देकर भाग जाने की सलाह देने वाला महायोगी, पुण्यात्मा ऋषि दयानन्द ही थे। स्वामी जी के जीवन की अनेक घटनाएं और बाते हैं, जिससे हम बहुत कुछ शिक्षा, प्रेरणा, मार्गदर्शन और आदर्श प्राप्त कर सकते हैं। उनका जीवन भी प्रेरक था और मृत्यु भी प्रेरक बनी। जाते-जाते भी नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बनाकर वैदिक धर्म का दीवाना बना गए।

घनघोर अमावस्या की रात में संसार को ज्ञान तथा प्रकाश की दीपावली देकर, ऋषि का जीवन भी निराला था, उनकी दीवाली भी निराली थी। संसार के इतिहास में ऐसा अनोखा व्यक्ति नहीं मिलेगा, जो होश में तारीख पूछकर, प्रभु को धन्यवाद करके, प्रार्थना करते हुए, हंसते-मुस्कुराते हुए जिसने शरीर छोड़ा हो, वह ऋषि दयानन्द थे, वे मृत्यु के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ गए, उनकी मृत्यु सुखांत थी 'क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण जीवन प्रभु की इच्छा पूर्ण हो' में लगा दिया था। 'ऐसे महापुरुष की स्मृति का पर्व है दीपावली' जिसे हमने हाल ही में मनाया है। आर्य समाज ऋषि दयानन्द का जीवंत स्मारक है, ऋषि के अधूरे विचारों, सिद्धान्तों आदर्श आदि का प्रचारक एवं प्रसारक आर्य समाज है। आर्य समाज के अतीत का इतिहास

तप-त्याग, बलिदान, सेवा, निमार्ण सुधार आदि कार्यों से भरा हुआ है। आर्य समाज के क्रांतिकारी विचारों, कार्यों, वैज्ञानिक चिंतन, सत्यमूलक सिद्धांतों आदि ने जीवन व जगत् को बड़ी दूर तक प्रभावित किया। आर्य समाज ने एक प्रकार से चौकीदार की भूमिका निभाई, जागते रहो।

ऋषि दयानन्द हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किले की दीवार बनकर खड़े हो गए, उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से हिन्दू धर्म का परिष्कृत, प्रेरक, व्यवहारिक तथा वैज्ञानिक स्वरूप संसार के सामने रखा, आर्य समाज के कार्यों की सबने सराहना की है। आर्य समाज के सिद्धांत, विचार, आदर्श तथा मान्यताएं सच्चे अर्थ में जीवन और जगत को सीधा, सच्चा एवं सरल मार्ग दिखा सकती हैं। परम्परागत प्रतिवर्ष दीपावली आती है, लोग मिलते हैं, भीड़ बिखर जाती है। हम अपना कर्तव्य पूरा समझ लेते है। जलसा, जुलूस, लंगर, फोटो, माला, भाषण आदि तक कार्यक्रम सीमित रह जाते हैं। महापुरुषों की जयंतियां, पर्व, स्मृति दिवस आदि हमें जगाने, संभालने व आत्मचिन्तन के लिए आते है। जिन उद्देश्यों, आदर्शों तथा सिद्धान्तों के लिए संस्था, संगठन व आर्य समाज बना था उस दिशा में चिंतन करना चाहिए। क्या खोया? क्या पाया? कहां के लिए चले थे? किधर जा रहे हैं, विवादों तथा स्वार्थों को छोड़ों, परस्पर मिलो, बैठो, सोंचो आर्य विचारधारा को कैसे आगे बढ़ायें- 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्देश्य कैसे प्राप्त करें, संसार में तेजी से फैल रहें ढोंग, पाखंड, गुरुडम आदि को कैसे हटाया जाए? दीपावली अंतस: में फैल रहे अंधकार को हटाने और मिटाने का संदेश लेकर आती है। दीवाली ऋषि दयानन्द को स्मरण करने का पर्व है, जो ऋषिवर ने सत्य सनातन वैदिक धर्म का मार्ग दिखाया था उससे हम भटक तो नहीं गए? जिन उद्देश्यों के लिए ऋषि ने आर्यसमाज बनाया था, उन सिद्धान्तों और विचारों के चिंतन की प्रेरणा देता है- ऋषि निर्वाणोत्सव जो हाल ही में मनाया गया है। आर्यों उठो! जागो! अपने स्वरूप, कर्तव्य तथा दायित्व को समझो तभी हम ऋषि को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि देने के हकदार हैं।

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाया जाए।

प्रबंध संपादक : 9871798221, 7011279734

यदि आप जीवन में सफलता और सुख प्राप्त करना चाहते हैं, तो सिर्फ सोचते ही न रहें। ठीक ढंग से सोचें, और समय पर ठीक निर्णय लेकर, उस पर शीघ्र ही आचरण भी करें

कुछ लोग काम करने में बड़े उतावले होते हैं। सब कामों में वे जल्दबाजी करते हैं। और इस जल्दबाजी के कारण बहुत बार वे हानियां उठाते हैं। जो लोग जल्दबाजी करते हैं, उनमें से अधिकतर लोग ऐसे होते हैं, जो थोड़ा सा विचार करके शीघ्र निर्णय लेते हैं, अर्थात पूरा विचार नहीं करते। दूरदर्शिता से विचार नहीं करते। जल्दबाजी में गलत निर्णय लेते हैं, और तुरंत काम कर देते हैं, जिसका परिणाम बाद में अच्छा नहीं आता, बल्कि दुखदायक होता है। ऐसे लोग जीवन में असफल हो जाते हैं।

कुछ दूसरे लोग ऐसे होते हैं, जो काम करने के विषय में सोचते रहते हैं, सोचते ही रहते हैं। महीनों तक सोचते रहते हैं, करते कुछ नहीं। बस योजनाएं बनाते रहते हैं, उन्हें बदलते रहते हैं। परन्तु क्रियात्मक रूप से पुरुषार्थ कुछ नहीं करते। ऐसे लोग भी असफल कहलाते हैं। पहले प्रकार के लोग गलत काम करके हानि उठाते हैं। दूसरे प्रकार के लोग काम करते ही नहीं, वे इस प्रकार से हानि उठाते हैं। इसलिए दोनों ही प्रकार के लोग सदा दुखी रहते हैं।

वास्तव में सही सोचना भी चाहिए और काम भी करना चाहिए। वेदों के अनुसार काम करने की सही विधि इस प्रकार से है, कि किसी भी विषय पर खूब चिंतन करें। सभी दृष्टिकोणों से विचार करें। यदि हम ऐसा काम करेंगे, तो क्या क्या लाभ होंगे। और यदि नहीं करेंगे, तो क्या क्या हानियां होंगी। हानि और लाभ की ठीक-ठीक तुलना करें। बुद्धिमत्ता से निर्णय लेवें। ठीक निर्णय लेने की यह विधि है। जिस पक्ष में लाभ अधिक और हानि कम दिखाई दे, उस काम को करने का निर्णय लें। और जिस कार्य में हानि अधिक तथा लाभ कम दिखाई दे, उस काम को न करें।

जो व्यक्ति इस प्रकार से निर्णय लेता है, वह बुद्धिमान कहलाता है। वह जल्दबाजी भी नहीं करता और केवल सोचता भी नहीं रहता। बल्कि ठीक समय पर ठीक निर्णय लेता है, और उसके बाद तुरंत कार्यवाही आरंभ करता है। ऐसा व्यक्ति अपने कार्यों में सफल हो जाता है। उसे लाभदायक एवं सुखद परिणाम प्राप्त होते हैं।

प्रस्तुति : स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, रोजड़, गुजरात

सत्य सनातन वैदिक धर्म

ईश्वर का वैदिक स्वरूप - ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों कारण स्वयं सिद्ध और अनादि हैं

संस्कृत भाषा में परमात्मा = परम+आत्मा तथा जीवात्मा = जीव+आत्मा दो शब्द हैं। परमात्मा शब्द का अर्थ है- सर्वश्रेष्ठ आत्मा और जीवात्मा का अर्थ है प्राणधारी आत्मा आत्मा शब्द दोनों के लिए आता है और बहुधा परम-आत्मा तथा जीव-आत्माओं का भेदभाव किये बिना समस्त जीवनतत्वों के लिए व्यवहृत किया जाता है। परमात्मा और जीवात्माओं के कार्यो में इतनी समानता है मगर दोनों के कार्य क्षेत्र निःसंदेह अत्यंत विभिन्न हैं कि प्रायः इनके संबंद्ध के विषय में भ्रम हो जाता है और इस भ्रम के कारण दर्शनशास्त्र तथा धर्म दोनों क्षेत्रों में बाल की खाल निकाली जाती है। खासतौर पर ईश्वर को ना मानने वाले लोग मनुष्य को ही 'सिद्ध' व 'ईश्वर' का दर्जा देकर अपनी अल्पज्ञता के कारण ऐसा विचार लाते हैं।

वैदिक ईश्वर का स्वरूप कैसा है और जीव का स्वरूप कैसा है, जब इस प्रकार की चर्चा की जाती है तब आवश्यक हो जाता है इस प्रकृतित के बारे में भी कुछ जाना जाए, इस कार्यरूप सृष्टि में तीन नियम स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, पहला- इस सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ नियमपूर्वक, परिवर्तनशील है। दूसरा- प्रत्येक जाति के प्राणी अपनी जाति के ही अंदर उत्तम, माध्यम और निकृष्ट स्वाभाव से पैदा होते हैं। तीसरा- इस विशाल सृष्टि में जो कुछ कार्य हो रहा है वह सब नियमित, बुद्धिपूर्वक और आवश्यक है।

पहला नियम : सृष्टि नियमपूर्वक परिवर्तनशील है इसका अर्थ जो लोग सृष्टि को स्वाभाविक गुण से परिवर्तनशील मानते हैं वे गलती पर हैं क्योंकि स्वाभाव में परिवर्तन नहीं होता ऐसे लोग भूल जाते हैं की परिवर्तन नाम है अस्थिरता का और स्वाभाव में अस्थिरता नहीं होती क्योंकि उलटपलट, अस्थिर ये नैमित्तिक गुण हैं स्वाभाविक नहीं। इसलिए सृष्टि में परिवर्तन स्वाभाविक नहीं। इसकी एक बड़ी वजह ये भी है कि यदि प्रकृति में परिवर्तन स्वाभाविक माने तो ये अनंत परिवर्तन यानी अनंत गति माननी पड़ेगी और फिर एकसमान अनंत गति मानने से संसार में किसी भी प्रकार से ह्रास विकास संभव नहीं रहेगा किन्तु सृष्टि में बनने और बिगड़ने की निरंतर प्रक्रिया से सिद्ध होता है कि सृष्टि का परिवर्तन नैमित्तिक है स्वाभाविक नहीं, इसीलिए इस परिवर्तन रूपी प्रधान नियम के द्वारा यह सिद्ध होता है कि सृष्टि के मूल कारणों में से यह एक प्रधान कारण है जो खंड-खंड, परिवर्तन शील और परमाणुरूप से विद्यमान है। परन्तु यह परमाणु चेतन और ज्ञानवान नहीं हैं इसकी बड़ी वजह है कि जो भी चेतन और ज्ञानवान सत्ता होगी वो कभी दूसरे के बनाये नियमो में बंध नहीं सकती बल्कि ऐसी सत्ता अपनी ज्ञानस्वतंत्रता से निर्धारित नियमों में बाधा पहुंचाती है।

दूसरा नियम : सभी प्राणियों के उत्तम और निकृष्ट स्वभाव हैं। अनेक मनुष्य प्रतिभावान, सौम्य और दयावान होते हैं, अनेक मुर्ख उद्दंड और निर्दय होते हैं। इसी प्रकार अनेक गौ, घोड़ा आदि पशु स्वाभाव से ही सीधे होते हैं और अनेक शेर, आदि क्रोधी और दौड़-दौड़कर मारने वाले होते हैं यहां देखने वाली बात है कि ये स्वभावविरोध शारीरिक यानी भौतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक हैं, जो चैतन्य बुद्धि और ज्ञान से सम्बन्ध रखता है। लेकिन ध्यान देने वाली है ये ज्ञान प्राणियों के सारे शरीर में व्याप्त नहीं है, क्योंकि यदि सारे शरीर में ये ज्ञान व्याप्त होता तो किसी का कोई अंग भंग यथा अंगुली, हाथ, पैर आदि कट जाने पर उसका ज्ञानंश कम हो जाना चाहिए लेकिन वस्तुतः ऐसा होता नहीं इसलिए यह निश्चित और निर्विवाद है कि ज्ञानवाली शक्ति जो प्राणियों में वास करती है वो पूरे शरीर में व्याप्त नहीं है प्रत्युत वह एकदेशी, परिच्छिन्न और अनुरूप ही है क्योंकि सूक्ष्मतिसूक्ष्म कृमियों में भी मौजूद है।

दूसरा तथ्य ये भी है की यदि पूरे शरीर में ज्ञानशक्ति मौजूद होती तो जैसे शरीर का आकर बढ़ता है वैसे उस शक्ति को भी बढ़ना पड़ता जबकि ऐसा होता नहीं और ये शक्ति परमाणुओं के संयोग से भी नहीं बनी क्योंकि ऊपर सिद्ध किया गया कि ज्ञानवान तत्व, परमाणु संयुक्त होकर नहीं बन सकता और न ही ये हो सकता है कि अनेक जड़ और अज्ञानी परमाणु एकत्रित होकर परस्पर संवाद ही जारी रख सकते हो। यदि कोई मनुष्य ब्रिटेन में जिस समय पर गाड़ी दौड़ा रहा है तो उसी समय पूरी दुनिया में मौजूद इंसान उस गाड़ी और मनुष्य को नहीं देख पा रहे इसलिए प्राणियों में मौजूद ज्ञानवान शक्ति, अल्पज्ञ है। इसलिए इस शक्ति को जीव, रूह और सोल के नाम से जानते हैं।

तीसरा नियम : इस विस्तृत सृष्टि में जो कुछ कार्य हो रहा है, वह नियमित, बुद्धिपूर्वक और आवश्यक है। सूर्य चन्द्र और समस्त ग्रह उपग्रह अपनी अपनी नियत धुरी पर नियमित रूप से भ्रमण कर रहे हैं। पृथ्वी अपनी दैनिक और वार्षिक गति के साथ अपनी नियत सीमा में घूम रही है। वर्षा, सर्दी और गर्मी नियत समय में होती है।

मनुष्य और पशुपक्ष्यादि के शरीरों की बनावट वृक्षों में फूलों और फलों की उत्पत्ति, बीज से वृक्ष और वृक्ष से बीज का नियम और प्रत्येक जाती की आयु और भोगों की व्यवस्था आदि जितने इस सृष्टि के स्थूल सूक्ष्म व्यवहार हैं, सबमे व्यवस्था, प्रबंध और नियम पाया जाता है। नियामक के नियम का सब बड़ा चमत्कार तो प्रत्येक प्राणी के शरीर की वृद्धि और ह्रास में दिखलाई देता है। क्यों एक बालक नियत समय तक बढ़ता और क्यों एक जवान धीरे धीरे ह्रास की और वृद्धावस्था की ओर बढ़ता जाता है इस बात का जवाब कोई नहीं दे सकता यदि कोई कहे कि वृद्धि और ह्रास का कारण आहार आदि पोषक पदार्थ हैं, तो ये युक्तियुक्त और प्रामाणिक नहीं होगा क्योंकि हम रोज देखते हैं एक ही घर में एक ही परिस्थिति में और एक ही आहार व्यवहार के साथ रहते हुए भी छोटे-छोटे बच्चे बढ़ते जाते हैं और जवान वृद्ध होते जाते हैं तथा वृद्ध अधिक जर्जर होते जाते हैं।

इन प्रबल और चमत्कारिक नियमों से सूचित होता है कि इस सृष्टि के अंदर एक अत्यंत सूक्ष्म, सर्वव्यापक, परिपूर्ण और ज्ञानरूपा चेतनशक्ति विद्यमान है जो अनंत आकाश में फैले हुए असंख्य लोक-लोकांतरों का भीतरी और बाहरी प्रबंध किये हुए हैं। ऐसा इसलिए तार्किक और प्रामाणिक है क्योंकि नियम बिना नियामक के, नियामक बिना ज्ञान के और ज्ञान बिना ज्ञानी के ठहर नहीं सकता। हम सम्पूर्ण सृष्टि में नियमपूर्वक व्यवस्था देखते हैं, इसलिए सृष्टि का यह तीसरा कारण भी सृष्टि के नियमों से ही सिद्ध होता है। इसी को परमात्मा, ईश्वर, खुदा और गॉड आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। जिसका मुख्य नाम 'ओ३म' है। सृष्टि के ये तीनों कारण स्वयंसिद्ध और अनादि हैं।

■■■

विज्ञान और अध्यात्म का अनोखा संगम

मैंने एक दिन अपनी पत्नी से पूछा, क्या तुम्हें बुरा नहीं लगता, मैं बार-बार तुमको बोल देता हूं, डांट देता हूं, फिर भी तुम पति भक्ति में लगी रहती हो। जबकि मैं कभी पत्नी भक्त बनने का प्रयास नहीं करता? मैं वेद का विद्यार्थी और मेरी पत्नी विज्ञान की, परन्तु उसकी आध्यात्मिक शक्तियां मुझसे कई गुना ज्यादा हैं, क्योंकि मैं केवल पढ़ता हूं, और वो जीवन में उसका पालन करती है। मेरे प्रश्न पर, जरा वो हंसी, और गिलास में पानी देते हुए बोली, ये बताइए, एक पुत्र यदि माता की भक्ति करता है, तो उसे मातृ भक्त कहा जाता है, परन्तु माता यदि पुत्र की कितनी भी सेवा करे,उसे पुत्र भक्त तो नहीं कहा जा सकता न।

मैं सोच रहा था, आज पुनः ये मुझे निरुत्तर करेगी। मैंने प्रश्न किया, ये बताओ- जब जीवन का प्रारम्भ हुआ, तो पुरुष और स्त्री समान थे, फिर पुरुष बड़ा कैसे हो गया, जबकि स्त्री तो शक्ति का स्वरूप होती है? मुस्कातें हुए उसने कहा- आपको थोड़ी विज्ञान भी पढ़नी चाहिए थी। मैं झेंप गया, उसने कहना प्रारम्भ किया, दुनिया मात्र दो वस्तु से निर्मित है- ऊर्जा और पदार्थ। पुरुष- ऊर्जा का प्रतीक है, और स्त्री- पदार्थ की। पदार्थ को यदि विकसित होना हो, तो वह ऊर्जा का आधान करता है, ना की ऊर्जा पदार्थ का। ठीक इसी प्रकार जब एक स्त्री एक पुरुष का आधान करती है, तो शक्ति स्वरूप हो जाती है, और आने वाली पीढ़ियों अर्थात अपनी संतानों के लिए प्रथम पूज्या हो जाती है, क्योंकि वह पदार्थ और ऊर्जा दोनों की स्वामिनी होती है, जबकि पुरुष मात्र ऊर्जा का ही अंश रह जाता है।

मैंने पुनः कहा, तब तो तुम मेरी भी पूज्य हो गई न, क्योंकि तुम तो ऊर्जा और पदार्थ दोनों की स्वामिनी हो? अब उसने झेंपते हुए कहा- आप भी पढ़े-लिखे मूर्खो जैसे बात करते हैं। आपकी ऊर्जा का अंश मैंने ग्रहण किया, और शक्तिशाली हो गई, तो क्या उस शक्ति का प्रयोग आप पर ही करूं? ये तो कृतघ्नता हो जाएगी। मैंने कहा, मैं तो तुम पर शक्ति का प्रयोग करता हूं, फिर तुम क्यों नहीं? उसका उत्तर सुन मेरी आंखों में आंसू आ गए।

उसने कहा- जिसके संसर्ग मात्र से मुझमें जीवन उत्पन्न करने की क्षमता आ गई, और ईश्वर से भी ऊंचा जो पद आपने मुझे प्रदान किया, जिसे माता कहते हैं? उसके साथ मैं विद्रोह नहीं कर सकती। फिर मुझे चिढ़ाते हुए उसने कहा, यदि शक्ति प्रयोग करना भी होगा, तो मुझे क्या आवश्यकता। मैं तो माता सीता की भांति लव-कुश तैयार कर दूंगी, जो आपसे मेरा हिसाब किताब कर लेंगे। नमन है- सभी मातृशक्तियों को जिन्होंने अपने प्रेम और मर्यादा में समस्त सृष्टि को बांध रखा है।

➲➲

ऋषि दयानन्द न आये होते तो हम दीपावली न मनाते होते

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

देश भर में व विदेश में भी जहां भारतीय आर्य हिन्दू रहते हैं, वहां कार्तिक मास की अमावस्या के दिन दीपावली का पर्व मनाया जा जाता है। अमावस्या के दिन रात्रि में अंधकार रहता है जिसे दीपमालाओं के प्रकाश से दूर करने का संदेश दिया जाता है। इस दिन ऐसा क्यों किया जाता है, इसका अवश्य कोई कारण होगा। प्राचीन काल में भारत का हर उत्सव व पर्व यज्ञ व अग्निहोत्र करके मनाया जाता था। बाद में यज्ञ में पशु हिंसा होने लगी। इसके विरोध में बौद्ध मत व जैन मत का आविर्भाव हुआ जो पूर्ण अहिंसा पर आधारित मत थे।

यज्ञों में होने वाली हिंसा के कारण वैदिक काल में किये जाने वाले अहिंसात्मक यज्ञ भी समाप्त हो गये। इनसे वायुमंडल व वर्षा जल की शुद्धि और स्वास्थ्य आदि को होने वाले लाभों सहित जो आध्यात्मिक लाभ होते थे, वह भी बंद हो गये। अब पूजा दीप जलाकर की जाने लगी। सम्भव है यह यज्ञ का ही एक विकृत रूप था। यज्ञ में घृत की आहुति से घृत को जलाया जाता है। इसके जलने से वायु के अनेक दोष व दुर्गुंधादि कुछ मात्रा में दूर होते हैं। वायु में विद्यमान हानिकारक कीटाणुओं पर भी इसका प्रभाव पड़ता है और उनकी संख्या में कमी आती है। दीप की ज्योति की उपमा अनेक स्थानों पर जीवात्मा से भी दी जाती है। किसी घर में किसी की मृत्यु हो जाती है तो उस परिवार में वहां कुछ दिनों तक दिवंगत व्यक्ति के शयन कक्ष में एक दीपक जला कर रखा जाता है। यह एक प्रकार से आत्मा का प्रतीक माना जाता है। वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करने पर इसका कोई लाभप्रद उद्देश्य प्रतीत नहीं होता अपितु यह एक अंधविश्वास व मिथ्या परम्परा ही प्रतीत होती है। ऋषि दयानन्द जी ने भी इस विषय में कुछ नहीं लिखा परन्तु स्पष्ट किया है कि मृत्यु होने पर अंत्येष्टि कर्म करने के बाद मृतक व्यक्ति के लिये कोई कर्म करना शेष नहीं है। हां, घर की शुद्धि जल से व दीवारों पर चूने तथा गोबर के लेपन आदि से की जा सकती है। इससे हानिकारक किटाणुओं का नाश होता है। जहां जितनी अधिक स्वच्छता होती हैं, वहां हानिकारक किटाणु उतने ही कम होते हैं। वायुमंडल विद्यमान हानिकारक सूक्ष्म किटाणुओं को नष्ट करने का प्रभावशाली उपाय अग्निहोत्र यज्ञ ही है। पं. लेखराम जी ने भी एक बार एक ऐसे घर में यज्ञ कराया था जहां सर्पों का वास था और जहां रात्रि में सर्प निकला करते थे। पं. लेखराम जी ने वहां जाकर शुद्ध गोघृत से यज्ञ कराकर उस कमरे को पूर्णतया बन्द कर दिया था जिससे रात्रि के बाद जब उसे खोला गया तो वहां सभी सर्प बेहोश पड़े हुए थे।

दीपावली पर विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि यह शरद ऋतु के आगमन पर मनाया जाने वाला पर्व है। इससे पूर्व हम गर्मी व वर्षा ऋतु का सुख ले रहे थे। अब शरद ऋतु आरम्भ होने पर हमें अपने स्वास्थ्य की रक्षा करनी है। शरद ऋतु भी पर्वतों व पर्वतीय प्रदेशों में अधिक तथा मैदानी क्षेत्रों में न्यून व दक्षिण भारत के कुछ स्थानों पर बिलकुल नहीं होती। शीत ऋतु में वहां का तापक्रम कुछ कम अवश्य रहता है परन्तु वहां जनवरी के महीने में जब उत्तर न से वृहद यज्ञों का विधान था। जिसका बिगड़ा रूप ही दीप जलाने को देखकर प्रतीत होता है। हम समझते हैं कि वृहद यज्ञ व ईश्वरोपासना करके, नये वस्त्र पहनकर, मिष्ठान्न व पकवान बनाकर व अपने प्रियजनों व निर्धन बंधुओं में उसका वितरण करके तथा रात्रि में सरसों के तेल व घृत के दीपक जलाकर यदि दीपावली मनायें तो यह दीपावली मनाने का उचित तरीका है। इसके विपरीत पटाखों में धन का अपव्यय करके, वायु प्रदूषण करके तथा अनावश्यक हुड़दंग करके पर्व को मनाना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। इससे तो हमारी मानसिक अवस्था व सोच का पता चलता है। हमारी सोच स्वयं को स्वस्थ व प्रसन्न रखने वाली, अपने स्वजनों का कल्याण करने वाली तथा देश व समाज को आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त करने वाली होने वाली चाहिये। महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर दृष्टि डाले तो वह यही सन्देश देते हुए प्रतीत होते हैं कि जीवन में कोई भी ऐसा कार्य न करें जिसका वेदों में विधान न हो और जिसके करने से हमें व समाज को कोई लाभ न होता हो। प्रदूषण उत्पन्न करने वाले किसी कार्य को किसी भी मनुष्य को कदापि नहीं करना चाहिये। यह कार्य यज्ञीय भावना के विरुद्ध होने से निषिद्ध व त्याज्य है। हमें अबलों व निर्धनों के जीवन को भी सुखमय बनाने के लिये कुछ दान अवश्य करना चाहिये। उनको भी अच्छा भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा व चिकित्सा सहित सुखमय जीवन व्यतीत करने का अधिकार है।

भारत के सभी पर्वतों पर हिमपात होता है और लोगों के शरीरों मे ठिठुरन होती है, ऐसे में वहां किसी गर्म व ऊनी वस्त्र की आवश्यकता नहीं होती। अत: उत्तर भारत के लोगों को शीत ऋतु के कुप्रभावों से स्वयं को बचाने के लिये सावधान होना होता है। भोजन में ऐसे पदार्थों का सेवन करना होता है जिससे कि शीत से होने वाले रोग न हो।

दीपावली के दिन प्राचीन काल में नवान्न से वृहद यज्ञों का विधान था। जिसका बिगड़ा रूप ही दीप जलाने को देखकर प्रतीत होता है। हम समझते हैं कि वृहद यज्ञ व ईश्वरोपासना करके, नये वस्त्र पहनकर, मिष्ठान्न व पकवान बनाकर व अपने प्रियजनों व निर्धन बंधुओं में उसका वितरण करके तथा रात्रि में सरसों के तेल व घृत के दीपक जलाकर यदि दीपावली मनायें तो यह दीपावली मनाने का उचित तरीका है। इसके विपरीत पटाखों में धन का अपव्यय करके, वायु प्रदूषण करके तथा अनावश्यक हुड़दंग करके पर्व को मनाना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। इससे तो हमारी मानसिक अवस्था व सोच का पता चलता है। हमारी सोच स्वयं को स्वस्थ व प्रसन्न रखने वाली, अपने स्वजनों का कल्याण करने वाली तथा देश व समाज को आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त करने वाली होने वाली चाहिये। महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर दृष्टि डाले तो वह यही सन्देश देते हुए प्रतीत होते हैं कि जीवन में कोई भी ऐसा कार्य न करें जिसका वेदों में विधान न हो और जिसके करने से हमें व समाज को कोई लाभ न होता हो। प्रदूषण उत्पन्न करने वाले किसी कार्य को किसी भी मनुष्य को कदापि नहीं करना चाहिये। यह कार्य यज्ञीय भावना के विरुद्ध होने से निषिद्ध व त्याज्य है। हमें अबलों व निर्धनों के जीवन को भी सुखमय बनाने के लिये कुछ दान अवश्य करना चाहिये। उनको भी अच्छा भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा व चिकित्सा सहित सुखमय जीवन व्यतीत करने का अधिकार है। यदि समाज में किसी व्यक्ति को शोषण, अन्याय, अपराध, पक्षपात, उपेक्षा, छुआछूत, अभाव व अज्ञान का सामना करने पड़े तो वह देश व समाज अच्छा या प्रशंसा के योग्य नहीं होता। वेद और महर्षि दयानन्द के जीवन से हमें यही शिक्षा प्राप्त होती है।

ऋषि दयानन्द ने अपने विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु दंडी स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से 1863 में दीक्षा लेकर उनकी ही प्रेरणा से देश व समाज से अविद्या, अज्ञान, अंधविश्वास, कुरीतियां, मिथ्या परम्पराओं को हटाने के लिये वेदों व उनकी मान्यताओं तथा सिद्धान्तों का प्रचार आरम्भ किया था। वह समाज को अज्ञान से मुक्त कर उसे ज्ञान व विद्या से पूर्णत: सम्पन्न व समृद्ध करना चाहते थे। मत-मतान्तरों का आधार भी अविद्या ही है। धर्म केवल वेद व उसकी सत्य मान्यताओं का ज्ञान व आचरण को कहते हैं। मत-मतान्तरों की अविद्या के कारण ही संसार में मनुष्य दु:खी व पीड़ित हैं। ऋषि दयानन्द के समय व उससे पूर्व मुसलमान व ईसाई हिन्दुओं का छल, भय, लोभ व ऐसे अनेक प्रकार के उपायों से अज्ञानी, ज्ञानी, निर्धन, पीड़ित लोगों का धर्मान्तरण करते थे। औरंगजेब के उदाहरण से ज्ञात होता है कि वह प्रतिदिन हिन्दुओं को भयाक्रांत कर सहस्त्रों हिन्दुओं का धर्मान्तरण करता था। ऋषि दयानन्द के समय में हिन्दुओं की संख्या कम हो रही थी व दूसरे मतों की संख्या बढ़ रही थी। हिन्दुओं की कुछ मान्यतायें व कुरीतियां भी हिन्दुओं को अपने पूर्वजों के धर्म का त्याग करने के लिये बाध्य करती थीं।

यदि दयानन्द न आते तो यह क्रम चलता रहता और आज हिन्दुओं की जो संख्या है वह इससे कहीं अधिक कम होती। ऋषि ने देश को आजाद कराने के जो विचार दिये थे, वह भी न मिलते। पता नहीं स्वदेशी व स्वतंत्रता का आन्दोलन भी चलता या न चलता। ऐसी स्थिति में हिन्दुओं की स्थिति अत्यधिक चिंताजनक होती। जैसे पाकिस्तान व मुस्लिम देशों में हिन्दुओं को अपने धर्म पालन में स्वतंत्रता नहीं है, वहां हिन्दू मंदिरों का निर्माण नहीं कर सकते, वैसी ही स्थिति भारत में भी उत्पन्न हो जाती। ऋषि दयानन्द ने इन सब बातों को जाना व समझा था।

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के बारे में महापुरुषों के विचार

- महर्षि दयानन्द इतने अच्छे और विद्वान आदमी थे कि प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए सम्मान के पात्र थे।
  – सर सैयद अहमद खां
- अगर आर्यसमाज न होता तो भारत की क्या दशा हुई होती इसकी कल्पना करना भी भयावह है। आर्यसमाज का जिस समय काम शुरू हुआ था कांग्रेस का कहीं पता ही नहीं था। स्वराज्य का प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था यह आर्यसमाज ही था जिसने भारतीय समाज की पटरी से उतरी गाड़ी को फिर से पटरी पर लाने का कार्य किया। अगर आर्यसमाज न होता तो भारत-भारत न होता।
  – अटल बिहारी बाजपेयी
- स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्यावर्त आर्यावर्तियों के लिए घोषणा की। **– एनी बेसेन्ट**

संध्या आदि पंच सकारों के उद्घोषक महात्मा हंसराज

तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवास: कवत्नवे। ऋ. 7/32/9। अर्थात् विद्वान, ज्ञानी एवं पुरुषार्थी जन ही जीते व जीतते हैं, वे ही रहते हैं, वे ही पुष्ट होते हैं, वे ही दुर्गुणों से रहित होते है। वेद का यह संदेश मानभाजन महात्मा हंसराज जी के जीवन का भी अंग बना। आज महात्मा हंसराज जी की जयंती है। उनका जन्म 19 अप्रैल 1864 में बजवाड़ा होशियारपुर, पंजाब में हुआ। उनके पिता लाला चुन्नीलाल जी एवं माता गणेशी देवी थी। हंसराज जी के प्राथमिक शिक्षा उनके गांव में हुई। अग्रिम शिक्षा-दीक्षा लाहौर के मिशन हाई स्कूल एवं पंजाब यूनिवर्सिटी में हुई। 1885 में हंसराज जी ने बीए तक की शिक्षा पूर्ण कर ली।

महात्मा जी के जीवन का यह ऐसा अवसर था कि प्रेय मार्ग को अपना कर सरकारी नौकरी करके गृह का वैभव बढ़ाते। वैभव बढ़ाने की आवश्यकता भी थी क्योंकि फरवरी 1876 में उनके पिता लाला चुन्नीलाल जी दिवंगत हो चुके थे, जो अपील नवीस के सरकारी अदालत में कार्य कर गृह का भरण पोषण करते थे, वह सुविधा भी समाप्त हो चुके थी। पारिवारिक व्यवस्था हेतु, मात्र उनके बड़े भाई मुल्कराज ही सहारा थे।

गौरवशाली संकल्प : हंसराज जी जीवन का कुछ निर्णय लेते सरकारी नौकरी का प्रकल्प बनता इससे पूर्व ही हंसराज जी ने लाहौर आर्य समाज के लाला लाजपत राय, पं. गुरुदत्त एवं लाला शिवनाथ आदि आर्य युवक भाइयों के सानिध्य से आर्य समाज वैदिक धर्म, समाज सुधार आदि के विचारों से भी भली-भांति अपने को रंग लिया था। इतना ही नहीं 30 अक्टूबर 1883 में अजमेर नगर की भिनाय कोठी में राष्ट्र के सशक्त हितैषी, वेदोद्धारक, वेदभाष्यकार, संस्कृतिरक्षक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के भौतिक शरीर ने भी सदा-सदा के लिए राष्ट्र से विदा ले ली थी। उन महर्षि की स्मृति एवं उनके कार्य को आगे प्रसारित करने के लिए संस्कृत, वेदवेदांग, आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा के लिए दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल व कॉलेज की स्थापना हो, इस विचार का आर्य समाज लाहौर के पं. गुरुदत्त एवं लाला जीवनदास आदि ने ८ नवम्बर 1883 को सर्व सम्मति निर्णय भी ले लिया था। स्कूल, कॉलेज के निर्माण के लिए धन इकट्ठा किया जाने लगा।

डीएवी स्कूल, कॉलेजों में की स्थापना के क्षेत्र एवं उनके संचालन करने वाले व्यक्ति का निर्णय अभी शेष था। स्कूल, कॉलेजों की स्थापना का संकल्प करने वाले आर्यजनों का क्या निर्णय होता, यह तो नहीं कहा जा सकता। पर उनकी चिंता एवं दयानन्द का ऋण, शिक्षा की बिगड़ती दशा, समाज को विकृत करने वाली कुरीतियां आदि परिस्थितियों को देखते हुए पुरुषार्थी, साहसी, त्यागी, जन्मजात संन्यासी लाला हंसराज जी ने दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल, कॉलेजों की सेवा एवं शिक्षण के दायित्व का गौरवशाली संकल्प कर डाला।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा : लाला हंसराज जी ने डीएवी स्कूल व कॉलेज की सेवा का जो संकल्प लिया था, उसकी भी यह विशेषता थी कि बिना वेतन एवं बिना पारिश्रमिक के सेवा करूंगा। 3 नवम्बर 1885 को अपने निर्णय का पत्र महात्मा हंसराज जी ने लाहौर आर्य समाज की अंतरंग सभा को दे दिया। यद्यपि महात्मा हंसराज जी के इस निर्णय से उनके पारिवारिक जनों को लाभ नहीं था, परंतु समाज, देश का लाभ बहुत था । हंसराज जी ने बड़ी दृढ़ता के साथ श्रेय मार्ग अपना लिया। 1 जून 1886 को दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल का प्रारम्भ हुआ, जिनके संचालन संरक्षण का दायित्व महात्मा हंसराज जी को दिया गया, प्रथम प्रिंसीपल भी वे ही बने। उन्होंने इन संस्थानों की अवैतनिक सेवा 25 वर्ष तक की। 25 वर्ष पश्चात् 1911 में डीएवी स्कूल व कॉलेज की स्थापना की रजत जयंती मनायी गई, उस समय उन्होंने अपने प्राचार्य पद के त्याग का संकल्प भी ले लिया। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:, यजु. 40/1, इस वेदाज्ञा को शिरोधार्य कर पद त्याग दिया।

शिष्ट पंक्ति के व्यक्ति : महात्मा हंसराज ने जिस समय डीएवी की सेवा का संकल्प लिया, उस समय उनकी अवस्था 22 वर्ष की थी। कालांतर में परिवार बसा, परिवार में स्वयं, पत्नी, दो पुत्र, तीन पुत्रियां एवं माता सब आठ सदस्य थे। उनके संसाधनों की व्यवस्था का दायित्व था, इधर अवैतनिक सेवा का संकल्प, दोनों का सामंजस्य उनके बड़े भाई मुल्कराज जी ने बनाया। हंसराज जी ने डीएबी से तो कभी भी आजीवन द्रव्य नहीं लिया। प्रतिमास अनेक प्राध्यापकों को हजारों रुपये दिये, किन्तु स्वयं एक पैसा भी न लिया। बड़े भाई मुल्कराज जी ने प्रतिमास 40 रुपये देकर उनके संकल्प को दृढ़ बनाया। भाई की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र बलराज ने वित्त का प्रबंध किया। भाई द्वारा प्रदत्त 40 रुपये की आय के द्वारा ही उन्होंने अपने परिवार की व्यवस्था की। त्यागी, तपस्वी, मितव्ययी जनों को आर्यावर्त में शिष्ट कहा जाता रहा है।

➲ आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

दीपावली

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

भारतीय महोत्सवेषु चत्वार: प्रधानोत्सवा विद्यन्ते- रक्षाबंधनम्, विजयादशमी, दीपावली, होलिकोत्सवश्च। तेषु चतुर्षु उत्सवेष्वपि दीपावली अस्माकं भारतीयानाम् अर्याणां कृते अतीव महत्त्वपूर्णाऽस्ति। अयमुत्सव: प्रतिवर्ष कार्तिक कृष्णामावस्यायां महता समारोहेण सहर्षमनुष्ठीयते। सर्वत्र जनैरविरलानि दीपकानि प्रज्ज्वाल्यन्ते। अत एवास्योत्सवस्य नाम दीपमालिका, दीपावली इत्यादि प्रसिद्धम्। पौराणिकी कथा प्रसिद्धा विद्यते, यतो हि अस्मिन्नेव दिने भगवता वामनावतारेण बलिना वशीकअता लक्ष्मी: विमोचिता। अत एव अस्मिन्दिने लक्ष्मीपूजनं क्रियते, यत्ततो मुक्ता लक्ष्मीरस्माकं गृहं समागच्छेत्।

अपरं भारतं कृषिप्रधानो देशोऽस्ति। क्षेत्रेषु समुत्पन्नोऽन्नराशि: गृहम् समायाता। तं दृष्ट्वा प्रसन्ना: कृषि-गोरक्षा-वाणिज्यकर्माणो वैश्या उत्सवं कुर्वन्ति। चिराय पूर्वमेव जना उत्सवेऽस्मिन् संलग्ना जायन्ते। धनत्रयोदशी नरकचतुर्दशी अपि उत्सवस्यास्य द्वे अङ्गे। प्रथमदिने त्रयोदश्यां जना: पात्राणि क्रीणन्ति। द्वितीयदिने भगवता कृष्णेन नरकासुर नाम दानवो हत: अत एवेयं चतुर्दशी नरकचतुर्दशीनाम्ना संबोध्यते।

अस्योत्सवस्य प्रधानो दिवसोऽमावास्या। अस्मिन्दिने सर्वे जना: गृहद्वाररथ्य-शालादिमार्गान् संशोधितान् कुर्वन्ति। बालक वृद्धा नरा नार्यश्च आत्मानं विभूषयन्ति। बालकबालिकानां मनांसि मोदकानि विविधानि मिष्ठान्नानि च विलोक्य प्रमुदितानि भवन्ति। पण्यवीथयो देवमंदिराणि च नानापकवानद्रव्यै: समलङ्कृतानि भवन्ति।

रात्रौ तु मर्त्यलोक: स्वर्गवद् दृश्यते। परस्परं मिष्ठान्नस्यादानप्रदानं भवति। प्रत्येकमहोत्सवेन यथा बहवो लाभा: भवन्ति चेत्, केचिद् हानयोऽपि भवन्ति। त्रिगुणात्मके जगति गुणदोषयो: सर्वत्र समावेशो भवति।

अस्मिन्महोत्सवे जना। द्यूतक्रीड़ां कुर्वन्ति। अयमेव कलङ्को विद्यते। अस्मित्रुत्सवे कुप्रथेयमस्ति। द्यूतक्रीडया देशस्य अपकारो भवति। बहवो जना द्यूते सर्वस्वं विनाशयन्ति। पुरा युधिष्ठरादयो पाण्डवा: सम्राट् नलश्च नैषधराज: द्यूतेनैव सर्वस्वं विनाशं कृत्वा वनं गत्वा बहुकष्टं प्राप्नुवन्निति पौराणिकी कथा विद्यते। अतोऽस्य निराकरणं विधाय रामायण-महाभारत कथा हरिकीर्तनं महालक्ष्म्या: पूजनश्च कर्त्तव्यम् येन देशस्य राष्ट्रस्य च उन्नति: स्यात्॥

वेदा: महत्वम् : विश्वे धर्मपदवाच्या: (ये वस्तुत: धर्मेति कथयितुं न शक्या: सन्ति) नैका: सम्प्रदाया: नैका: पन्थान: विद्यन्ते, येषां स्वस्वसम्प्रदायग्रन्था: अपि सन्ति। एतस्यां परिस्थितौ वेदान् एव परमप्रमाणरूपेण किमर्थं मन्येमहि? इति प्रश्न: स्वाभाविकतया एव उद्भवति। अयं कश्चन एतादृश: प्रश्न: वर्तते, यस्य उत्तरदानेन विना वेदान् प्रमाणरूपान् मन्तुं वयं विश्वस्य केनापि मानेन आग्रहं कर्तुं न शक्नुम:। न कमपि एतदनुगुणम् अनुसर्तुं वक्तुं शक्नुम:। प्रश्न: तु सर्वथोचित: अस्ति, अपि च अहं मन्ये यत् वेदान् परमप्रमाणं मन्यमानै: प्रत्येकै: अपि जनविशेषै: अस्य युक्तिपूर्वकमुत्तरं देयमेव। लेखेऽस्मिन् अस्यैव प्रश्नस्य उत्तरप्रदानस्य प्रयास: क्रियमाण: वर्तते।

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **अभाव :** जैसे किसी ने किसी से कहा कि तू जल ले आ, उसने वहां देखा कि यहां जल नहीं है, परंतु जहां जल है, वहां से ले आना चाहिए। इस अभाव निमित्त से जो ज्ञान होता है, उसको 'अभाव' प्रमाण कहते हैं।
- **वेद :** जो ईश्वरोक्त, सत्यविद्याओं से युक्त, ऋक्संहितादि चार पुस्तक हैं कि जिनसे मनुष्यों को सत्य-सत्य ज्ञान होता है, उसको 'वेद' कहते हैं।
- **शास्त्र :** जो सत्वविद्याओं के प्रतिपादन से युक्त हो और जिसे करके मनुष्यों को सत्य-सत्य शिक्षा हो, उसको 'शास्त्र' कहते हैं।
- **पुराण :** जो प्राचीन ऐतरीय शतपथ ब्रह्मणादि ऋषि-मुनिकृत सत्यार्थ पुस्तक है, उन्हीं को 'पुराण' कहते हैं।

पं जवाहर लाल नेहरू

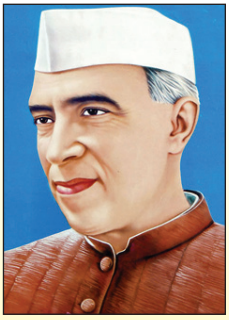

जन्म : 14 नवम्बर
शत्-शत् नमन

पं. जवाहरलाल नेहरू (नवंबर 14, 1889–मई 27, 1964) भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे और स्वतन्त्रता के पूर्व और पश्चात् की भारतीय राजनीति में केन्द्रीय व्यक्तित्व थे। महात्मा गांधी के संरक्षण में, वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सर्वोच्च नेता के रूप में उभरे और उन्होंने 1947 में भारत के एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापना से लेकर 1964 तक अपने निधन तक, भारत का शासन किया। वे आधुनिक भारतीय राष्ट्र-राज्य-एक सम्प्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, और लोकतांत्रिक गणतंत्र के वास्तुकार माने जाते हैं। कश्मीरी पंडित समुदाय के साथ उनके मूल की वजह से वे पंडित नेहरू भी बुलाए जाते थे, जबकि भारतीय बच्चे उन्हें चाचा नेहरू के रूप में जानते हैं। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री का पद संभालने के लिए कांग्रेस द्वारा नेहरू निर्वाचित हुए, गांधीजी ने नेहरू को उनके राजनीतिक वारिस और उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार किया। प्रधानमंत्री के रूप में, वे भारत के सपने को साकार करने के लिए चल पड़े। भारत का संविधान 1950 में अधिनियमित हुआ, जिसके बाद उन्होंने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधारों के एक महत्त्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की। विदेश नीति में, भारत को दक्षिण एशिया में एक क्षेत्रीय नायक के रूप में प्रदर्शित करते हुए, उन्होंने गैर-निरपेक्ष आंदोलन में एक अग्रणी भूमिका निभाई। भारत में उनका जन्मदिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता हैं और बच्चों के वह चाचा नेहरू थे।

महात्मा हंसराज : आर्यसमाज के नेता एवं शिक्षाविद

स्मृति : 15 नवम्बर
शत्-शत् नमन

भारत में शिक्षा के प्रसार में डीएवी विद्यालयों का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यालयों की इस श्रृंखला के संस्थापक हंसराज जी का जन्म महान संगीतकार बैजू बावरा के जन्म से प्रसिद्ध हुए ग्राम बैजवाड़ा, जिला होशियारपुर, पंजाब में 19 अप्रैल, 1864 को हुआ था। बचपन से ही शिक्षा के प्रति इनके मन में बहुत अनुराग था पर विद्यालय न होने के कारण हजारों बच्चे अनपढ़ रह जाते थे। वह शिक्षा के प्रसार के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे लेकिन उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और जिम्मेदारी उनके ऊपर ही थी लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी उन्होंने 22 वर्ष की आयु में डीएवी स्कूल में प्रधानाचार्य के रूप में अवैतनिक सेवा आरंभ की जिसे वह 25 वर्षों तक करते रहे। महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त थे। लाला हंसराज अविभाजित भारत के पंजाब के आर्य समाज के एक प्रमुख नेता एवं शिक्षाविद् थे। पंजाब भर में दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालयों की स्थापना करने के कारण उनकी कीर्ती अमर है। देश, धर्म और आर्य समाज की सेवा करते हुए, 15 नवम्बर, 1936 को महात्मा हंसराज जी ने अंतिम सांस ली।

राजनेता स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय

बलिदान : 17 नवम्बर
शत्-शत् नमन

लाला लाजपत राय भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने वाले मुख्य क्रांतिकारियों में से एक थे। वह पंजाब केसरी (पंजाब का शेर) के नाम से विख्यात थे और कांग्रेस के गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्र पाल) में से एक थे। उन्होंने पंजाब नैशनल बैंक (पीएनबी) और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को दुधिके गॉव में हुआ था जो वर्तमान में पंजाब के मोगा जिले में स्थित है। वह मुंशी राधा किशन आज़ाद और गुलाब देवी के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनके पिता बनिया जाति के अग्रवाल थे। बचपन से ही उनकी माँ ने उनको उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी थी। लाला लाजपत राय ने बहुत से क्रांतिकारियों को प्रभावित किया और उनमें एक थे शहीद भगत सिंह। सन् 1928 में साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन के दौरान हुए लाठी-चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये और 17 नवम्बर सन् 1928 को परलोक सिधार गए।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम धर्म के साक्षात् स्वरूप हैं। उनका चरित्र विश्व मानव के लिए आदर्श चरित्र है। भगवान श्रीराम के बाल्यकाल से लेकर प्रणयकाल तक की सम्पूर्ण लीलाएं धर्म व मर्यादा से ओत-प्रोत हैं। भगवान श्रीराम के पारिवारिक जीवन में मर्यादा का इतना उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत करते हैं कि समस्त विश्व उन्हें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहकर संबोधित करता है।

भाइयों के प्रति प्रेम से उनका हृदय इतना द्रवित रहता था कि वे भाइयों के साथ खेलते समय स्वयं हार जाते लेकिन अपने भाइयों को हारा हुआ नहीं देख सकते थे। जब गुरुजनों एवं माता-पिता के बीच राज्याभिषेक की चर्चा चली तो सबका झुकाव श्रीरामजी की ओर था। तब रामजी सोचने लगे कि 'सब भाई एक साथ जन्मे, साथ-साथ सबका पोषण हुआ, साथ-साथ खाये-पीये, खेले-पढ़े फिर यह क्या कारण है कि एक ही भाई को राजगद्दी मिले?' वे हमेशा पहले भाइयों की सुख-सुविधा की बात सोचते, बाद में अपनी।

मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम ने जिन्होंने त्रेता युग में रावण का संहार करने के लिए धरती पर जन्म हुआ। कौशल्या नंदन प्रभु श्री राम अपने भाई लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न से एक समान प्रेम करते थे। उन्होंने माता कैकेयी की 14 वर्ष वनवास की इच्छा को सहर्ष स्वीकार करते हुए पिता के दिए वचन को निभाया। उन्होंने 'रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाय' का पालन किया। भगवान श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम इसलिए कहा जाता है क्योंकि इन्होंने कभी भी कहीं भी जीवन में मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। माता-पिता और गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए वह 'क्यों' शब्द कभी मुख पर नहीं लाए। वह एक आदर्श पुत्र, शिष्य, भाई, पति, पिता और राजा बने, जिनके राज्य में प्रजा सुख-समृद्धि से परिपूर्ण थी।

केवट की ओर से गंगा पार करवाने पर भगवान ने उसे भवसागर से ही पार लगा दिया। राम सद्गुणों के भंडार हैं इसीलिए लोग उनके जीवन को अपना आदर्श मानते हैं। सर्वगुण सम्पन्न भगवान श्री राम असामान्य होते हुए भी आम ही बने रहे। युवराज बनने पर उनके चेहरे पर खुशी नहीं थी और वन जाते हुए भी उनके चेहरे पर कोई उदासी नहीं थी। वह चाहते तो एक बाण से ही समस्त सागर सुखा सकते थे लेकिन उन्होंने लोक-कल्याण को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए विनय भाव से समुद्र से मार्ग देने की विनती की। शबरी के भक्ति भाव से प्रसन्न होकर उसे 'नवधा भक्ति' प्रदान की। वर्तमान युग में भगवान के आदर्शों को जीवन में अपना कर मनुष्य प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पा सकता है। उनके आदर्श विश्वभर के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

श्रीराम वैदिक संस्कृति और सभ्यता के आदर्श प्रतीक हैं। राम के जीवन में वैदिक संस्कृति का साकार रूप देखने को मिलता है। मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत जब हम विश्व के महापुरुषों के जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तो राम का जीवन सर्वोपरि जान पड़ता है। आज हजारों वर्षों से राम का पावन चरित्र लाखों लोगों को प्रेरणा

और मार्गदर्शन दे रहा है। वाल्मीकि रामायण में (3/37/13) मारीच रावण से राम के गुणों का वर्णन करते हुए कहता है- रामो विग्रहवान धर्मः अर्थात श्रीराम धर्म के मूर्ति मान स्वरूप हैं। राम सत्य के आधार हैं और सत्य को सर्वस्व मानते हैं। सुमित्रा कहती हैं है- नहि रामात परो लोके विधते सत्पथ स्थितः (वाल्मीकि 2/44/26) श्रीराम से बढकर सन्मार्ग में स्थिर रहनेवाला मनुष्य संसार में दूसरा कोई नहीं है।धर्मप्राण भारतीय जीवन दृष्टि, महान चरित्र और मानवीय आदर्श सबसे अधिक राम के जीवन में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। वाल्मीकि ने विभिन्न स्थलों पर राम को धर्मज्ञः, धर्मस्य, परिरक्षकः, धर्मनित्यः, धर्मात्मा, धर्मवत्स्तः, धर्मभूतांवरः आदि शब्दों से संबोधित किया है। श्रीराम को मर्यादा पुरूषोत्तम कहा जाता है क्योंकि बचपन से जीवन पर्यन्त राम के जीवन का कोई भी भाग देखें तो उनके जीवन में कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन हुआ हो, ऐसा देखने को नहीं मिलता।

विद्यार्थी जीवन, गृहस्थ राजा, पिता-पुत्र ,पति-पत्नी, स्वामी-सेवक, गुरु -शिष्य अथवा भाई के रूप में सर्वत्र एक नियमित जीवन दिखाई देता है। विकारों, विचारों अथवा व्यवहार में उन्होंने कहीं भी मर्यादा नहीं छोड़ी।

डा. महेशाज घोलकर

आत्म मंथन

जहां हमें इस्लाम व ईसाईयत की अवैदिक मान्यताओं से लड़ना है वहां हमें स्वयं के धर्म में आई कुरितियों अंधविश्वासों व पाखंड को भी दूर करना है। गत लगभग दो हजार वर्षों से बहुत कूड़ा-कर्कट अपनी-अपनी आस्था के नाम पर इकट्ठा हो गया है। जब तक इस कूड़े को ढ़ोते रहेंगे हम कभी भी यवनों का सामना छाती तान कर नहीं कर सकेगें।

ऋषि दयानन्द जी ने इस बात को समझा और सबसे पहले उन्होंने हमारे अपने धर्म में आई कुरितियों का जम कर खंडन किया पश्चात यवनों व मलेच्छों की धुलाई की। परन्तु उनको विष देकर मारने वालों में सबसे आगे हिन्दू ही थे क्योंकि वे चाहते थे कि यवनों व मलेच्छों का तो खंडन किया जाये पर उनका न किया जाये। उनके जाने के बाद भी स्थिति जस की तस बनी हुई है आज भी हिन्दू आर्य समाज को समझ ही नहीं पा रहा वह समझता है कि आर्यजन उनकी आस्थाओं पर चोट कर उनको आपस में लड़ा रहा है। जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल विपरित है। आर्य समाज धर्म के नाम पर चल पड़े सब अंधविश्वास व पाखंड को दूर कर उन्हें बहुत मजबूत करना चाहता है।

आज जब हम कुराण बाईबल आदि की दकियानूसी अवैज्ञानिक बातों का खंडन करते हैं तो वे हमारे पुराणों में लिखी कपोल कल्पित हास्यास्पद गाथाओं को लेकर बैठ जाते हैं, गली मुहल्लों में दो दो रुपयों में बिकने वाले भगवानों को लेकर बैठ जाते हैं, हमें हजार वर्ष तक गुलाम बनाये रखने की शेखी मारने लगते हैं। भांति-भांति की मूर्तियों व भांति-भांति के भगवानों की पूजा हमारी लम्बी दास्ता का मुख्य कारण रहा है। आर्य समाज कोई मजहव नहीं वह तो एक आंदोलन है जो सब मजहवों की दीवारों को तोड़ना चाहता है और विश्वबंधुत्व, मनुर्भव, कृण्वन्तोविश्वार्यम जैसे वेद संदेशों को साकार करना चाहता है। आर्य समाज अपने गुरु ऋषि दयानन्द की तरह विष पीकर अमृत पिलाने में विश्वास रखता है। ऋषि दयानन्द जी का मानना था कि जब तक भिन्न-भिन्न मतमतान्तरों का विरुद्धावाद नहीं छूटेगा विश्व में एकता व शान्ति नहीं हो सकती। जब तक हिन्दू ऋषि दयानन्द की एक एक बात को स्वीकार कर उसे आत्मसात नहीं करेगा तब तक वह दुष्ट यवनों व मलेच्छों का डट कर सामना नहीं कर सकेगा। पता नहीं कब यह बात हिन्दू भाइयों को समझ लगेगी, कब वे आर्यों को अपना असली मित्र व शुभचिंतक समझेगें? कब वे सब अंधपरम्पराओं का परित्याग कर यज्ञ व योग को अपनी दिनचर्या की अंग बनायेंगे?

पशुबलि, पाषाणपूजा, मांसभक्षण, अवतारवाद, अद्वैतवाद, राशि फल आदि वेदविरुद्ध मान्यताओं को छोड़ना ही होगा। निर्मल बाबा, रामरहीम, रामपाल, राधे मां जैसे पाखंडी गुरुओं और विभिन्न चैनलों पर सुबह-सुबह लोगों का भविष्य व दुःख दूर करने के टोटके बताने वाले मूर्खों के विरुद्ध आवाज उठानी ही होगी वरन् एक और लम्बी दास्ता को झेलना पड़ सकता है। सब प्रकार की शंकाओं के निवारण व धर्म कर्म की सही सही जानकारी के लिये महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय सभी मनुष्यों के लिए बहुत आवश्यक है। स्व. स्वामी वेदानन्द 'वेदतीर्थ' ने देश विभाजन से पूर्व मुलतान आर्यसमाज में उपदेश देते हुए सत्यार्थ प्रकाश की गरिमा एवं महत्ता विषयक रोचक संस्मरण सुनाया था, जो इस प्रकार है- 'मैं एक बार हरिद्वार के मायापुर क्षेत्र में घूम रहा था।

मैंने देखा कि कुछ सनातनी साधु 'सत्यार्थप्रकाश' लेकर आ रहे हैं। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ। मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने बताया कि अमुक स्थान पर महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी यह पुस्तक साधुओं को बांट रहे हैं। मेरा आश्चर्य और भी बढ़ा। मैं स्वयं वहां गया और साधुओं की पंक्ति में खड़ा हो गया। मेरी बारी आने पर मालवीय जी ने मुझे भी वह पुस्तक दी और कहा कि 'बाबा इस पुस्तक को पढ़ना।' मैंने उनसे कहा- 'मैं एक नास्तिक की लिखी पुस्तक नहीं पढूंगा।' मालवीय जी ने पुनः पुस्तक ले लेने का आग्रह करते हुए कहा- 'इस पुस्तक का पाठ करके तो देखो।' तब मैंने पुनः कृत्रिम क्रोध में कहा- 'जिस पुस्तक में हमारे देवी-देवताओं एवं पुराणों तथा मूर्तिपूजा का खंडन किया गया है, मैं इसे पढ़ना तो क्या स्पर्श भी नहीं कर सकता। आप क्यों मुझे विवश करते हैं? तब मालवीय जी मुस्कुराकर कहने लगे- 'स्वामी जी! सनातनी तो मैं भी हूं। मूर्तिपूजक भी हूं। फिर भी मैं आपसे आग्रह करूंगा कि एक बार इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये।' ऋषि दयानन्द पर विजय पाना असम्भव था क्योंकि वे वैदिक वांड्मय और संस्कृत के अनुपम भंडार थे। उनके शब्दों की धधकती हुई आग से उनके विरोधियों का विरोध भस्मसात हो जाया करता था। वे लोग जल की प्रबल बाढ़ के साथ दयानन्द की तुलना किया करते थे।

■■ डा. मुमुक्षु आर्य

सुहागिनों का त्योहार करवा-चौथ का व्रत

■ गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)

पति की लम्बी आयु की कामना या पत्नी की इच्छापूर्ति का साधन- व्रत का अर्थ है-बर्तन, बर्ताव या कर्तव्यपालन अर्थात किसी कार्य, नियम, अनुष्ठान आदि को करने का दृढ़ निश्चय कर लेना कहलाता है न कि भूखे रहकर उपवास करना। आज व्रत का वास्तविक अर्थ तो पीछे छूट गया है लेकिन जिस अर्थ को लेकर महिलाएं व्रत रखती हैं उस पर भी खरी नहीं उतरती। अब इनके व्रत-व्रत नहीं एक तरफ तो व्रत हैं और दूसरी तरफ अपनी इच्छापूर्ति का साधन। साथ ही बढ़ते हुए अंधविश्वास की पराकाष्ठा इतनी हो गई है कि शिक्षित होने के बाद भी महिलाएं इन व्रतों से जुड़ी कपोल-कल्पित दंत कथाओं पर विचार किए बिना ही अंधाविश्वास कर लेती हैं तथा कई बार न चाहते हुए भी डर से यह व्रत करती हैं। पहली प्रचलित व्रत कथा इस प्रकार है- तुंगभद्रा नदी के किनारे करवा नाम की एक धोबिन रहती थी। उसका पति नदी में कपड़े धो रहा था कि अचानक उसे मगरमच्छ ने पकड़ लिया। उसने करवा को पुकारा। वह यमलोक के दरबार में जाकर पति के जीवनदान के लिए आग्रह करने लगी। यमराज ने प्रसन्न होकर कहा- 'जाओ तुम्हारा पति तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। आज से जो भी महिला तुम्हारी तरह कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी का व्रत रखेगी, उसके पति की रक्षा मैं करूंगा' करवा घर पहुंची। सचमुच ही उसका पति प्रतीक्षा कर रहा था।

जरा विचार करें कि क्या जो व्यक्ति एकबार यमलोक चला गया वह पुन: लौटकर वापस आ सकता है? यदि नहीं तो फिर उस धोबिन का पति कैसे जीवित हो गया? यह बिल्कुल असंभव है और सृष्टि नियम के विरुद्ध है। सामान्य सी बात है जरा विचार करें कि वास्तव में किसी का मृतक परिजन यदि लौटकर उनके घर के दरवाने पर आ खड़ा हो तो क्या वे उसे स्वीकार कर लेंगे? बहुरूपिया कहकर नहीं भगाएंगे? अच्छा चलो मान भी लें कि उसका पति जीवित हो गया तो फिर क्या उसका पति इस घटना के बाद कभी सामान्य उम्र बीतने पर भी नहीं मरा? यदि मरा तो फिर उसके करवा चौथ के व्रत का क्या फायदा हुआ? इसी करवा चौथ की दूसरी प्रचलित कथा इस प्रकार है-

अर्जुन जब तप करने के लिए जाने लगे तब पति-परायणा द्रोपदी चिंतित हो उठी। उसने श्रीकृष्ण से अपने पति के तप की निर्विघ्न समाप्ति का उपाय पूछा श्रीकृष्ण ने वही 'कर्क-चतुर्थी का व्रत बतलाया जो शिव ने पार्वती को पति के कल्याण के लिए बताया था। शिव ने पार्वती से कहा कि- किसी गृहस्थ के सात पुत्र और एक वीरवती नाम की पुत्री थी। उसने अपने सौभाग्य की रक्षा के लिए करवा चौथ का व्रत किया। रात्रि भोजन के समय भाईयों ने बहन को भोजन के लिए बुलाया। बहन ने कहा कि उसका व्रत है, वह चन्द्रमा के दर्शन करके ही भोजन करेगी। उपवास से व्याकुल बहन को देखकर भाइयों ने कृत्रिम प्रकाश कर कहा कि चन्द्रमा के दर्शन कर लो। इस कृत्रिम प्रकाश को ही चन्द्रमा समझकर बहन ने अर्घ्य आदि देकर भोजन कर लिया। इस व्रत-दूषण से उसके पति की सहसा मृत्यु हो गई। एक वर्ष तक वीरवती शिव की पूजा-अर्चना करते हुए निराहार व्रत करती रही। करवा चौथ आने पर उसने विधिपूर्वक व्रत पूर्ण करके भोजन किया। परिणाम स्वरूप उसका पति जीवित हो गया। जो स्त्रियां विधि पूर्वक करवा चौथ का व्रत करती हैं वे सदा सौभाग्यवती रहती हैं। श्रीकृष्ण से इस कथा का श्रवण कर द्रोपदी ने भी यह व्रत किया।

सर्वप्रथम तो यहां विचार करने की बात यह है कि द्रोपदी विदुषी थी और अर्जुन वीर धनुर्धारी थे। पहली बात तो इतनी विद्वान द्रोपदी जो क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाली थी एवं शस्त्र विद्या में भी पारंगत थी, क्या वह इन गपोड़ों को मान्यता दे सकती है? कभी नहीं। दूसरी बात वीरवर अर्जुन पहली बार तो तप करने के लिए घर से निकले नहीं होंगे उनका तो बचपन ही अपने पिता व माताओं के साथ में वन में बीता और वे बड़े होकर श्रेष्ठ धर्नुविद्या के ज्ञाता बनें तो क्या वे अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकते थे। क्या व्रत करके द्रोपदी उनकी विद्या का मजाक उड़ा रही थी कि उसके द्वारा किया गए करवाचौथ के व्रत से ही अर्जुन की रक्षा होगी। तभी अर्जुन का तप निर्विघ्न समाप्त होगा अन्यथा कुछ भी हो सकता है। रही बात कथा की तो चंद्रमा के दर्शन से पूर्व भोजन करने से तो पति का मृत्यु हो गई और एक वर्ष बाद चंद्रमा के दर्शन करके भोजन करने पर मरा हुआ पति भी जीवित हो उठा। यह सृष्टि प्रक्रिया के सर्वथा विपरीत हैं। ■■

महात्मा गांधी और वाल्मीकि मंदिर की घटना

दिल्ली के वाल्मीकि मंदिर में प्रार्थना करने के लिए उपस्थित हुए महात्मा गांधी ने कुरान की कुछ आयतों का पाठ किया। इस पर प्रस्तुत सज्जन ने आक्षेप किया तो उसे पुलिस ने पकड़ लिया। गांधी जी ने प्रार्थना बंद कर दी और अपने भाषण में कहा कि ऐसी संकुचित हृदयता पर उन्हें बड़ा दुख हुआ और उन्होंने कहा कि कुछ हिन्दू प्रार्थना में कुरान की आयतें पढ़ने पर क्यों आक्षेप करते हैं? इन वाक्यों में ईश्वर की स्तुति और प्रार्थना की गई है। इससे हिन्दू धर्म को क्या हानि पहुंच सकती है? 11 मई, 1947 के हरिजन अखबार में इस प्रसंग के विषय में लिखा- मुझे एक मित्र ने बताया है कि कुरान की आयतों का जो आशय है वो यजुर्वेद में भी मिलता है। जिन्होंने हिन्दू धर्म को पढ़ा है वे जानते है कि 108 उपनिषदों में से एक अल्लोपनिषद भी है। क्या जिस व्यक्ति ने उसे लिखा उसे अपने धर्म का ज्ञान न था?

समीक्षा : गांधी जी के हरिजन अखबार में छपी टिप्पणी का प्रतिउत्तर आर्यसमाज के दिग्गज विद्वान पं धर्मदेव विद्यामार्तण्ड ने सार्वदेशिक पत्रिका के मई 1947 के अंक में सम्पादकीय के रूप में दिया। पं जी लिखते है- गांधी जी ने अल्लोपनिषद का वर्णन किया। वास्तविकता में ईश, केन, कठ आदि 11 उपनिषद् ही ऋषिकृत उपनिषदें हैं। इसके अतिरिक्त 100 से ऊपर उपनिषदें सांप्रदायिक लोगों ने बना लिए थे जिनमें एक अल्लोपनिषद भी है। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के 14वें समुल्लास के अंत में भंडाफोड़ करते हुए लिखा है- 'यह तो अकबरशाह के समय में अनुमान है कि किसी ने बनाई है। इस का बनाने वाला कुछ अर्बी और कुछ संस्कृत भी पढ़ा हुआ दिखता है क्योंकि इस में अरबी और संस्कृत के पद लिखे हुए दिखते हैं। देखो! (अस्माल्लां इल्ले मित्रवरुणा दिव्यानि धत्ते) इत्यादि में जो कि दश अंक में लिखा है, जैसे-इस में (अस्माल्लां और इल्ले) अर्बी और (मित्रवरुणा दिव्यानि धत्ते) यह संस्कृत पद लिखे हैं वैसे ही सर्वत्र देखने में आने से किसी संस्कृत और अर्बी के पढ़े हुए ने बनाई है। यदि इसका अर्थ देखा जाता है तो यह कृत्रिम अयुक्त वेद और व्याकरण रीति से विरुद्ध है। जैसी यह उपनिषद् बनाई हैं, वैसी बहुत सी उपनिषदें मतमतान्तर वाले पक्षपातियों ने बना ली हैं। जैसी कि स्वरोपनिषद्, नृसिहतापनी, रामतापनी, गोपालतापनी बहुत सी बना ली हैं।

हरिजन में गांधी जी लिखते है- 'मैं एक सनातनी हिन्दू होने का दावा करता हूं और चूंकि हिन्दू मजहब और दूसरे सब मजहबों का निचोड़ मजहबी रवादारी या धार्मिक सहिष्णुता है, इसलिए मेरा दावा है कि अगर में एक अच्छा हिन्दू हूं तो एक अच्छा मुसलमान और एक अच्छा ईसाई भी हूं अपने मजहब को दूसरे मजहबों से बड़ा मानना सच्ची मजहबी भावना के खिलाफ है। अहिंसा के लिए नम्रता जरूरी है। क्या हिन्दू धर्म शास्त्रों में भगवान के हजारों नाम नहीं बतलाये गए हैं? रहीम भी उसमें से एक क्यों न हो? कलमे में तो सिर्फ भगवान की तारीफ की गई है और मुहम्मद साहिब को उनका पैगम्बर माना गया है। जिस तरह में बुद्ध, ईसा और जरदुश्त को मानता हूं उसी तरह मुझे खुदा की तारीफ करने मुहम्मद साहब को पैगम्बर मानने में कोई हिचकिचाहट नहीं होती।

समीक्षा : पंडित जी लिखते हैं- धार्मिक सहिष्णुता का यह अर्थ है कि दूसरे मत वालों को सुनकर हम उन पर विचार करें और युक्तियों से ही उनके विचारों को बदलने का प्रयत्न करें न कि जबरदस्ती व तलवार के बल से। किन्तु इसका अर्थ उनकी बुद्धि विरुद्ध असंगत बातों को मानना नहीं है। क्या महात्मा जी कह सकते है कि अहिंसा, ब्रह्मचर्य, दयालुता आदि का जो आदर्श आर्यों के धर्म शास्त्रों में बतलाया गया है वही कुरान इत्यादि में भी पाया जाता है? इसी प्रकार से कहां वेद का एक पत्नीव्रत आदर्श सिद्धांत और कहां अपनी सगी बहन को छोड़कर किसी से भी बहुविवाह। कहां निराकार वेद विदित ईश्वर और कहां आसमान में तख्त पर बैठने वाला शरीरधारी खुदा। जहां तक कलमा की बात है उसकी दूसरी पंक्ति कि मुहम्मद उस खुदा का दूत है ऐसा कहना और जो मुहम्मद साहिब को पैगम्बर नहीं मानते चाहे वो कितने भी अच्छे क्यों न हो उनको दोजख अर्थात नर्क जाना पड़ेगा। यह सर्वदा अनुचित और युक्ति विरुद्ध है।

कुरान की आयतों पर टिप्पणी करते हुए पंडित जी ने ख्वाजा हसन निजामी के कुरान भाष्य से एक प्रमाण पंडित जी ने प्रस्तुत किया जिसमें लिखा है- जो मार्ग से भटके हुए है अल्लाह उन पर क्रोध करता है। पंडित जी इसकी तुलना यजुर्वेद 'अग्ने न्य सुपथा' मंत्र से कि जिसका अर्थ है हे ज्ञान स्वरूप परमेश्वर! हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सदा उत्तम धर्ममार्ग पर चला।

■■ डॉ. विवेक आर्य

सच्ची सम्पदा

एक महर्षि थे। उनका नाम था कणाद। किसान जब अपना खेत काट लेते थे तो उसके बाद जो अन्न-कण पड़े रह जाते थे, उन्हें बीन करके वे अपना जीवन चलाते थे। इसी से उनका यह नाम पड़ गया था। उन जैसा दरिद्र कौन होगा! देश के राजा को उनके कष्ट का पता चला। उसने बहुत-सी धन-सामग्री लेकर अपने मंत्री को उन्हें भेंट करने भेजा। मंत्री पहुंचा तो महर्षि ने कहा, 'मैं सकुशल हूं। इस धन को तुम उन लोगों में बांट दो, जिन्हें इसकी जरुरत है।' इस भांति राजा ने तीन बार अपने मंत्री को भेजा और तीनों बार महर्षि ने कुछ भी लेने से इंकार कर दिया। अंत में राजा स्वयं उनके पास गया। वह अपने साथ बहुत-सा धन ले गया। उसने महर्षि से प्रार्थना की कि वे उसे स्वीकार कर लें, किन्तु वे बोले, 'उन्हें दे दो, जिनके पास कुछ नहीं है। मेरे पास तो सब कुछ है।'

राजा को विस्मय हुआ! जिसके तन पर एक लंगोटी मात्र है, वह कह रहा है कि उसके पास सब कुछ है। उसने लौटकर सारी कथा अपनी रानी से कही। वह बोली, 'आपने भूल की। ऐसे साधु के पास कुछ देने के लिए नहीं, लेने के लिए जाना चाहिए।' राजा उसी रात महर्षि के पास गया और क्षमा मांगी। कणाद ने कहा, 'गरीब कौन है? मुझे देखो और अपने को देखो। बाहर नहीं, भीतर। मैं कुछ भी नहीं मांगता, कुछ भी नहीं चाहता। इसलिए अनायास ही सम्राट हो गया हूं।' एक सम्पदा बाहर है, एक भीतर है। जो बाहर है, वह आज या कल छिन ही जाती है। इसलिए जो जानते हैं, वे उसे सम्पदा नहीं, विपदा मानते हैं। जो भीतर है, वह मिलती है तो खोती नहीं। उसे पाने पर फिर कुछ भी पाने को नहीं रह जाता। ■■

जीवन का बीमा

दो मित्र थे। बड़े परिश्रमी और मेहनती। अपने परिश्रम से दोनों एक दिन बड़े सेठ बन गए। दोनों ने बड़ा व्यवसाय खड़ा कर लिया। पहले सेठ ने अपनी सारी संपत्ति का बीमा करवा लिया। उसने अपने मित्र को बार-बार यही परामर्श दिया की वह भी अपनी सम्पत्ति का बीमा करवा ले। परन्तु दूसरे मित्र ने उसकी बात को अनसुना कर दिया। दुर्भाग्य से एक दिन शहर में आग लग गई। दोनों की सारी संपत्ति जल कर राख हो गई। पहले सेठ ने बीमा करवा रखा था इसलिये उसे सारी संपत्ति वापस मिल गई जबकि दूसरा मित्र निर्धन बन गया। मगर हाथ पछताने के अतिरिक्त उसके पास कोई चारा नहीं बचा था।

मनुष्य का यह जन्म भी सेठ की संपत्ति के समान है। हम सभी को मालूम है की एक दिन इस शरीर को भस्म होना है मगर हम हैं की जीवन के इस अटल सत्य को जानकर भी अनसुना कर देते हैं। हम इसका कभी बीमा नहीं करवाते। न सत्कर्म करते हैं, न अभ्यास और वैराग्य द्वारा मोक्ष मार्ग को सिद्ध करते हैं, न योग मार्ग के पथिक बनते हैं, न ईश्वर का साक्षात्कार करते हैं। इसके विपरीत भोग, दुराचार, पाप, राग-द्वेष, ईर्ष्या, अभिमान, अहंकार, असत्य आदि के चक्कर में अपना बीमा ही करवाना भूल जाते हैं। वेद में अनेक मंत्रों के माध्यम से जन्म-मरण और मुक्ति की पवित्र शिक्षा को कहा गया हैं- शरीर रूप बंधन में आकर जीवात्मा जहां-तहां भटकता है- वेद शरीर नश्वर है इसके रहते हुए जो श्रेष्ठ कर्म किया जा सके करले अपने को संभाल के परमात्मा का स्मरण कर-वेद जीवात्मा वासनावश ऊंची-नीची योनियों में शरीर धारण करता है, शरीर अस्थिर है-वेद मैं नश्वर कच्चे घर (शरीर) में फिर न आऊं-वेद हमें नश्वर शरीर की प्राप्ति न हो, सर्वथा अखंड सुखसम्पत्ति मुक्ति को प्राप्त हो। ■■

वीर सावरकर और आर्यसमाज

वीर सावरकर को कालेपानी की सजा देते समय ब्रिटिश सरकार ने उनकी पैतृक संपत्ति, जिसमें उनका घर भी शामिल था, उसे जब्त कर लिया। उन्हें काले पानी के कारावास में भेज दिया गया। पीछे से अंग्रेज सरकार ने उनके चिन्हों का नामोनिशान मिटाने के लिए एक कुटिल चाल चली।

उनके पुश्तैनी घर को नीलाम करने का ब्रिटिश सरकार ने ऐलान कर दिया। आर्यसमाजी नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सदस्य एवं लाहौर से निकलने वाले प्रसिद्ध अखबार प्रताप के मालिक महाशय कृष्ण ने वीर सावरकर जी के घर को राष्ट्रीय धरोहर के रूप में मान देने का मन बनाया और अंग्रेजों की नाक के नीचे अपने अखबार में नीलामी में उस निवास को खरीदने के लिए चंदा एकत्र करना आरंभ कर दिया। ठीक नीलामी वाले दिन महाशय कृष्ण के पुत्र कुमार नरेंदर जी ने वीर सावरकर की राष्ट्रीय धरोहर को खरीद लिया और जब वीर सावरकर जी काले पानी की सजा से छूटकर वापस नजरबंदी के लिए अपने घर लौटे तो उनके हाथों में उस घर की चाबी रखते हुए कुमार नरेंदर जी ने हिन्दू हृदय सम्राट एवं देश प्रेमी वीर सावरकर की खुल कर प्रशंसा की। वीर सावरकर जी के इस सम्मान से हर्षित होकर आंखों में आंसू निकल गये। यह था राष्ट्रवादी संस्थाओं आर्यसमाज और जनसंघ का आत्मीय सबंध।

■■ **प्रस्तुति : डॉ. विवेक आर्य**

Open Letters to Sir Syed Ahmed Khan

Article by- Lala Lajpat Rai- 1888

Would you excuse me if I encroach upon your valuable time for a short while? Before I address you on the subject matter of discussion I think it advisable to state for your information that I have been a constant reader and admirer of your writings. From childhood, I was taught to respect the opinions and the teachings of the white-bearded Syed of Aligarh. Your Social Reformer was constantly read to me by my fond father, who looked upon you as no less than a prophet of the nineteenth century. Your writings in the. Aligarh Institute Gazette and your speeches in Council and other public meetings, were constantly studied by me and preserved as a sacred trust by my revered parent.

It was thus that I came to know that you once approved of the contents of John Stuart Mill's book on "Liberty," and it was thus that I came to know that the present Chief Justice of Hyderabad, a staunch opponent of the National Movement, once translated Jeremy Bentham's book on "Utility" for the readers of your Social Reformer. Is it strange then that I have been astonished to read what you now speak and write about the "National Congress"?Any person, in my circumstances, would shout out. Times have changed; and with them, convictions! Flattery and official cajoleries have blinded the eyes of the most far-seeing; cowardice has depressed the souls of the foremost of seekers after truth, and high-sounding titles and the favours of worldly governors have extinguished the fire of truth burning in many a noble heart. Is it not a sad spectacle to the men whose days are numbered, whose feet are almost in the grave, trying to root out all the trees planted with their own hands!Under these circumstances, Syed Sahib, it is, surely, not strange if I ask what has been true cause of this lamentable change in you. Old age and exhaustion of faculties may, perhaps, have some share in causing you to forget what you once wrote and spoke. Has your memory lost its retentiveness, or is it the blindness of dotage which has permitted you to stray into your present unhappy position? If the former, I from amongst your old admirers will take upon myself the duty of reminding you of what, in moments of wisdom, was recorded and published by your pen and tongue, and this duty, I promise, I will fulfil with the utmost pleasure and with feelings of the highest satisfaction.

I will begin with your book on the "Causes of the Indian Revolt," which was written in 1858, though only translated and published in English in the year 1873. It may be worth while to note here that the translators of this were no others than Sir Auckland Colvin, the present Lieutenant-Governor of the North-West Provinces, and Lieutenant-Colonel Graham, the writer of your biography. In this book, after having tried to prove that the Mutiny of 1857 was no "religious war," nor the result of a preconcerted conspiracy, you say that "most men, I believe, agree in thinking that it is highly conducive to the welfare and prosperity of Government- indeed, that it is essential to its stability- that the people should have a voice in its Councils. It is from the voice of the people that Government can learn whether its projects are likely to be well received.

भजन

अगर स्वामी दयानन्द न, हमारा न खुदा होता।
न हम होते न तुम होते, न कश्ती का पता होता।।
तिलक चोटी जनेऊ के, सभी सपने लिया करते।
अगर ईसा का वप्तिस्मा, गले सब ले पड़ा होता।।

मोहम्मद के गुलामों में, हमें भी गिन लिया जाता।
प्रभु का नाम लेना भी, जहां में न बचा होता।।

लिये खंजर खड़ा होता, उधर जल्लाद मकतब में।
सरासर सामने उसके, हमारा सिर झुका होता।।

फरिश्ता बनके ऐ स्वामी, कहां से तू चला आया।
हमारे हाल पे वरना, कल सभी पड़ा होता।।

समय पर आपकी नजरें, जो न मुझको उठा लेतीं।
मैं खुद अपनी ही नजरों से, गिर गया होता।।

अभी कुछ भी नहीं हूँ मैं, 'पथिक' फिर भी बहुत कुछ हूँ।
अगर कुछ बन गया होता, तो न जाने मैं क्या होता।।

दोहे

आया था कुछ काम को तू सोया चादर तान।
सूरत संभाल ऐ गाफिल अपना आप पहचान।।

रात गंवाई सोय के दिवस गंवाया खाय।
हीरा जन्म अमोल था कौड़ी बदले जाय।।

मांगन मरण समान है मत मांगो कोई भीख।
मांगन से मरना भला यह सतगुरु की सीख।।

लूट सके तो लूट ले प्रभु नाम की लूट।
फिर पाछे पछताओगे प्राण जाहिं जब छूट।।

माया मरी न मन मरा मर मर गये शरीर।
आशा तृष्णा न मरी कह गये दास कबीर।।

भजन

उठो दयानन्द के सिपाहियों समय पुकार रहा है।
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है।।
उठो विश्व की सूनी आखें काजल मांग रही हैं।
उठो अनेकों द्रुपद सुताएं आंचल माग रही हैं।।
मरघट को पनघट सा कर दो जग की प्यास बुझा दो।
भटक रहे जो मरुस्थलों में उनको राह दिखा दो।।
गले लगा लो उनको जिनको जग दुत्कार रहा है।। 1॥

तुम चाहो तो पत्थर को भी मोम बना सकते हो।
तुम चाहो तो खारे जल को सोम बना सकते हो।।
तुम चाहो तो बंजर में भी बाग लगा सकते हो।
तुम चाहो तो पानी में भी आग लगा सकते हो।।
जातिवाद जग की नस-नस में जहर उतार रहा है।। 2॥

याद करो क्यों भूल गये जो ऋषि को वचन दिया था।
शायद वादा याद नहीं जो आपने कभी किया था।।
वचन दिया था ओ३म् पताका कभी न झुकने देंगे।
हवनकुंड की अग्नि घरों से कभी न बुझने देंगे।।
लहू शहीदों का गद्दारों को धिक्कार रहा है॥ 3॥

कब तक आंख बचा पाओगे आग बहुत फैली है।
उजली-उजली दिखने वाली हर चादर मैली है।।
लेखराम का लहु पुकारे आंख जरा तो खोलो।
एक बार मिलकर सारे ऋषि दयानन्द की जय बोलो।।
वेदज्ञान का व्यथित सूर्य अब तुम्हें निहार रहा है।। 4॥

आर्यसमाज और भारतीय शिक्षा पद्धति

■ डॉ. भवानीलाल भारतीय, अजमेर

लाला लाजपतराय ने अपनी पुस्तक 'दुःखी भारत' में यह बताया है कि अंग्रेजों के भारत में आगमन से पूर्व भारत में एक व्यवस्थित शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी। गांव-गांव में पाठशालायें स्थापित थीं जिनमें छात्र व्यवस्थित रूप से विभिन्न विद्याओं और शास्त्रों का अभ्यास करते थे। कालांतर में विदेशी शासन स्थापित होने पर शिक्षा की व्यवस्था में कुछ ऐसे परिवर्तन किये गये जिनके कारण इस देश के लोग अपनी अस्मिता को भूलने लगे और उनमें विदेशी संस्कार मूलबद्ध होते गये। ईसाई प्रचारकों ने भी शिक्षा में हाथ बटाया, परन्तु उनका प्रयोजन स्पष्ट ही अपने धर्म का प्रचार करना था। उनके द्वारा कहा गया कि इस शिक्षा के द्वारा उन लोगों को सच्चे ईश्वर तथा ईसा मसीह का वास्तविक ज्ञान प्राप्त कराया जायेगा जो मूर्तियों की घृणास्पद पूजा में लगे हुये हैं।

भारत की शिक्षा नीति को पाश्चात्य सांचे के अनुसार ढालने का प्रयास अंग्रेज शासकों ने किया ही ब्रह्मसमाज के प्रवर्तक राजा राम मोहनराय ने भी लार्ड मैकाले के स्वर में स्वर मिलाकर अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का ही गौरव गान किया। लार्ड एम हर्स्ट को लिखे गये अपने पत्र में उन्होंने संस्कृत के अध्ययन को क्लिस्ट बताते हुए लिखा- 'संस्कृत भाषा इतनी क्लिष्ट है कि उसे सीखने में लगभग सारा जीवन लगाना पड़ता है। ज्ञान वृद्धि के मार्ग में यह शिक्षा कई युगों से बाधक सिद्ध हो रही है। इसे सीखने पर जो लाभ होता है, वह इसको सीखने में किये गये परिश्रम की तुलना में नगण्य है। संस्कृत व्याकरण, वेदान्त, मीमांसा, न्याय आदि विषयों के शास्त्रीय अध्ययन की निरर्थकता तथा निस्सारता का प्रतिपादन करते हुए अंत में उपसंहार रूप में लिखा गया है-यह संस्कृत शिक्षा प्रणाली देश को अंधकार में गिरा देगी। क्या ब्रिटिश शासन की यही नीति है?.

संस्कृत शिक्षा और स्वामी दयानन्द : जिस समय में राजा राममोहनराय ने अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के प्रचलन का हार्दिक समर्थन किया। नवजागरण के उसी युग में नवोदय के एक अन्य सूत्रधार स्वामी दयानन्द ने शिक्षा के विषय में अपना मौलिक चिंतन प्रस्तुत किया तथा देश की परम्परागत शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धार का अभूतपूर्व प्रयास किया। शिक्षा शास्त्री के रूप में स्वामी दयानन्द ने शिक्षा विषयक जो सूत्र अपने लेखों, ग्रन्थों तथा वक्तताओं में दिये हैं, उनका संकलन और आंकलन किया जाना आवश्यक है। अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय और तृतीय समुल्लास में उन्होंने इस विषय को उठाया है। 'अथ शिक्षा प्रवक्ष्याम:' इस सूत्र के साथ द्वितीय समुल्लास का प्रारम्भ होता है तथा 'अथाऽध्ययनाऽध्ययनविधि व्याख्यास्याम' के साथ तृतीय समुल्लास की रचना आरम्भ होती है। दोनों अध्यायों में शिक्षा विषयक भारत की शास्त्रीय आर्य परिपाटी का विस्तृत विवेचन करते हुए स्वामी दयानन्द ने ब्रह्मचर्य आश्रम, स्वाध्याय और प्रवचन, अध्ययन समाप्ति के पश्चात दीक्षान्त अनुशासन, संस्कृत के शास्त्रीय वाङ्मय का अध्ययन क्रम और पाठविधि, त्याज्य और ग्राह्य पाठ्य पुस्तकें, स्त्रियों और शूद्रों का शास्त्राध्ययन अधिकार, स्त्री शिक्षा जैसे विषयों का सांगोपांग वर्णन किया है।

संस्कृत के पठन-पाठन के लिए स्वामी दयानन्द ने एक विशिष्ट क्रम निर्धारित किया था। इसका उल्लेख सत्यार्थप्रकाश के अतिरिक्त ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के पठन-पाठन विषय तथा संस्कार विधि के वेदारम्भ संस्कार के अन्तर्गत किया है। पठन-पाठन प्रणाली का यह विस्तृत निर्देश यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि स्वामी दयानन्द संस्कृत शिक्षा प्रणाली के मर्मज्ञ थे तथा वे उसमें क्रांतिकारी परिवर्तन करना चाहते थे।

अपनी इस पाठनविधि का क्रियान्वयन करने के लिए स्वामी जी ने स्वयं उत्तर प्रदेश के कई नगरों में संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना की। धनी वर्ग के लोगों को उन्होंने पाठशाला संस्थापन के पवित्र कार्य में आर्थिक सहायता देने के लिए प्रेरित किया। इन पाठशालाओं प्राचीन गुरुकुल प्रणाली के अनुरूप ही रखा गया जिसके अनुसार छात्र और अध्यापक एक-दूसरे के निकट सम्पर्क में रहकर चरित्र निर्माण के साथ-साथ शास्त्राध्ययन में प्रवृत्त हो सकें। स्वामी जी ने ये पाठशालायें कासगंज, फर्रुखाबाद, मिर्जापुर, छलेसर, काशी आदि स्थानों में स्थापित कीं। योग्य अध्यापकों के अभाव तथा आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन में छात्रों द्वारा विशेष अभिरुचि व्यक्त न किये जाने के कारण स्वामी जी को अपने जीवनकाल में ही इन पाठशालाओं को बंद कर देना पड़ा था। तथापि यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि संस्कृत के उद्धार हेतु स्वामी जी का पाठशाला संस्थापन का कार्य वस्तुत: श्लाघनीय था। इन पाठ शालाओं में ही आर्यसमाज द्वारा कालांतर में स्थापित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के बीज छिपे थे जिसने भारतीय शिक्षा क्षेत्र में युगांतरकारी परिवर्तन उपस्थित किया। स्वामी दयानन्द ने संस्कृत शिक्षा प्रणाली को सुगम बनाने के लिए 'पठन- पाठन व्यवस्था' के अंतर्गत कतिपय पाठ्य-ग्रन्थ भी लिखे। ऐसे ग्रन्थों में संस्कृत वाक्य प्रबोध, व्यवहारभानु तथा वेदांगप्रकाश के चौदह भाग उल्लेखनीय हैं।

■■ प्रस्तुतकर्ता : अमित सिवाहा

दीपावली के दिन ऋषि दयानन्द को अश्रुपूरित विदाई

ऋषि दयानन्द ने भयंकर विपरीत परिस्थितियों मे सत्य का मंडन और पाखंड का खंडन किया इसलिए सभी उनके विरोधी हो गये। उनके प्राण हरण की भयंकर चेष्टा की गई। जो उनके भरोसेमंद थे वे सब निकम्मे निकले। पहले उनके साथ भरतपुर का कल्लू कहार जिस पर स्वामी जी बहुत भरोसा और उससे प्रेम करते थे। वह छह-सात सौ रुपये का माल लेकर खिड़की के रास्ते भाग गया। फिर 29 सितम्बर 1883 को रात मे शाहपुरा निवासी धोड़ मिश्र रसोईया द्वारा दिये गये दूध को पीकर सोये।

उसी रात में उन्हें उदरशूल व वमन हुआ। फिर डाक्टर अलिमर्दान खां की चिकित्सा आरंभ हुई लेकिन रोग बढ़ता गया। उनके इलाज से दस्त अधिक आने लगे। लेकिन इससे भी बड़ी बात यह कि किसी आर्य समाज या अन्य को ऋषि की बीमारी की सूचना नहीं दी गई। बाद में 12 अक्टूबर 1883 को अजमेर के आर्य सभासद ने राजपूताना गजट में रोग का समाचार पढ़ा, तब दूसरे लोगों को पता लगा। लेकिन 15 अक्टूबर तक स्वामी जी की दशा पूर्णत: निराशाजनक हो गई। वहां से उन्हें आबू और फिर अंत में भक्तों के आग्रह करने पर उन्हें अजमेर पहुंचाया गया। अजमेर पहुंचने पर डाक्टर लछमन दास ने चिकित्सा आरम्भ की लेकिन कोई लाभ न हुआ 29 अक्टूबर को हालत और खराब हो गई उनके पूरे शरीर पर फफोले पड़ गये। जी घबराने लगा, बैठना चाहते थे लेकिन बैठा न गया। अन्त में वह दिन आया, 30 अक्टूबर 1883, अमावस्या संवत 1940, मंगलवार, दीपावली का दिन। दूसरा डाक्टर पीर इमाम अली हकीम अजमेर से बुलाये गये। बड़े डाक्टर न्यूटन साहब ने भी इलाज किया। लेकिन लाभ न हुआ। कहते हैं उनका मूत्र कोयले के समान काला हो गया था।

स्वामी जी ने अपने आप पानी लिया, हाथ धोये, दातून की और बोले हमें पलंग पर ले चलो, पलंग पर थोड़ी देर बैठे, फिर लेट गये। श्वास तेज चल रहे थे, जिन्हें रोककर वे ईश्वर का ध्यान करते थे। फिर लोगों ने हाल पूछा, तो कहने लगे एक मास बाद आज आराम का दिन है। इस तरह चार बज गये। स्वामी जी ने आत्मानन्द से कहा हमारे पीछे आकर खड़े हो जाओ या बैठ जाओ। फिर आत्मानन्द से पूछा क्या चाहते हो? सब यही चाहते है कि आप ठीक हो जाय। स्वामी जी ठहर कर बोले कि यह शरीर है, इसका क्या अच्छा होगा और हाथ बढ़ाकर उसके सिर पर धरा और कहा आनंद से रहना।

फिर स्वामी जी ने काशी से आये संन्यासी गोपाल गिरि से भी पूछा। उसने भी यही उत्तर दिया। जब यह हाल अन्य बाहर अलीगढ़ मेरठ कानपुर आदि से आये लोगों ने देखा तो वे स्वामी जी के सामने आकर खड़े हो गये, आंखों से आंसू बह रहे थे, तब स्वामी जी ने उन्हें ऐसी कृपा दृष्टि से देखा कि उसको बोला या लिखना असम्भव है, मानो ईश्वर से कह रहे हो कि हे ईश्वर! अपने इन बच्चों को तेरे सहारे छोडकर जा रहा हूं और उनसे कह रहे हो उदास मत हो धीरज रखो। दो दुशाले और दो सौ रुपये भीमसेन और आत्मानन्द को देने को कहा, किन्तु उन्होंने न लिये। लोगों ने पूछा आपका चित्त कैसा है? कहने लगे अच्छा है, तेज व अंधकार का भाव है। इस तरफ साढ़े पांच बज गये, स्वामी जी बोले, सब आर्यजनों को बुलाओ और मेरे पीछे खड़ा कर दो, केवल आज्ञा की देर थी तुरंत सब आ गये। तब स्वामी जी बोले, चारों ओर के द्वार खोल दो, छत के दोनों द्वार भी खोल दो। फिर पं. रामलाल से पूछा, आज कौन सा पक्ष तिथि व वार है? किसी ने कहा आज कृष्णपक्ष का अंत, शुक्ल पक्ष का आदि, अमावस्या-मंगलवार है। यह सुनकर कोठे की छत और दिवारों पर नजर डाली, फिर वेद मंत्र पढ़े, उसके बाद संस्कृत में ईश्वर की उपासना की, फिर ईश्वर का गुणगान करके बड़ी प्रसन्नता से गायत्री का पाठ करने लगे। फिर कुछ समय तक समाधि में रहकर आंख खोलकर बोले- 'हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है,तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, अहा! तैने अच्छी लीला की।'

बस इतना कह स्वामी जी महाराज ने जो सीधा लेट रहे थे, स्वयं करवट ली और एक झटके से श्वास रोककर बाहर निकाल दिया। इस तरह कलयुग का यह महामानव शरीर रूपी पिंजरा छोडकर आर्यों को रोता बिलखता छोड़कर परलोक की यात्रा पर चल दिया, उस समय शाम के छह बजे दिवाली का दिन 30 अक्टूबर 1883 का समय था। बाहर पंक्तिबद्ध दीपक जलते हुये मानो इस वेद रूपी ज्ञान का प्रकाश करने वाले अस्त होते सूर्य को अंतिम विदाई दे रहे हों।

चमकेंगे जब तक ये सूरज चांद और तारे।
हम है ऋषि दयानन्द तब तक ऋणी तुम्हारे।।

समाचार - सूचनाएं

- 2 अक्टूबर : महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री का जन्म दिवस मनाया गया।
- 24 अक्टूबर : महात्मा आनंद स्वामी स्मृति दिवस मनाया गया।
- 25 अक्टूबर : विजयदशमी और दंडी स्वामी विरजानंद स्मृति दिवस मनाया गया।
- 28 अक्टूबर : स्वामी समर्पणानंद स्मृति दिवस मनाया गया।
- 30 अक्टूबर : महर्षि दयानन्द का 137वां निर्वाण दिवस गाजीपुर गौशाला पर पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा मनाया गया।
- 31 अक्टूबर : लौहपुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल का जन्म दिवस मनाया गया।
- 14 नवम्बर : बाल दिवस और पं. जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री का जन्म।
- 14 नवम्बर : महात्मा हंसराज स्मृति दिवस।
- 17 नवम्बर : लाला लाजपत राय बलिदान दिवस।
- 24 नवम्बर : वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु स्मृति दिवस।
- डॉ. योगानन्द शास्त्री पूर्व स्पीकर दिल्ली विधानसभा द्वारा 'वैदिक देवता और उनके वाहन' पुस्तक की समीक्षा व विमोचन सम्पन्न हुआ।
- आर्य प्रतिनिधि सभा का वेबपोर्टल आरंभ।
- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 9 अक्टूबर को आर्य समाज हनुमान रोड के सत्संग हॉल में जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा मारे गए निर्दोष लोगों की आत्माओं की शांति के लिए शांति यज्ञ और प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री विद्यमित्र ठुकराल, आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक और संचालक स्वामी प्रवणानंद सरस्वती जी, दिल्ली सभा, आर्य मीडिया सेंटर, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सभी कार्यकर्ता उपस्थित थे।
- आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी, मूर्धन्य संन्यासी सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के प्रधान एवं वैदिक विरक्त मंडल के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) की तप:स्थली दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल प्रदेश का वार्षिकोत्सव मनाया गया।
- 21वां दुर्लभ शरद यज्ञ 8 अक्टूबर, 2021 को तपोवन देहरादून में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक सभा के प्रधान आर्यवेश जी ने पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता की।
- आर्य समाज का सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा बांग्लादेश में हिन्दू अल्पसंख्यकों के ऊपर हो रहे अत्याचार की घोर निंदा करती है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा-बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के प्रति हो रहा अत्याचार बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।
- अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के अवसर पर जनहित विकास परिषद हरियाणा द्वारा आयोजित श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान समारोह का जींद-हरियाणा में भव्य आयोजन किया गया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा शिक्षक ही सही अर्थों में राष्ट्र के निर्माता होते हैं। डॉ. अविनाश कुमार चावला ने कहा- शिक्षक का सम्मान राष्ट्र का सम्मान है।
- आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर द्वारा आयोजित सांस्कृतिक विरासत संभाल कार्यक्रम 17 अक्टूबर को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। स्वामी आर्यवेश ने कहा-भारतीय संस्कृति के प्रकाश पुंज थे योगेश्वर श्रीकृष्णचंद्र जी महाराज।
- हरियाणा के ऐतिहासिक नगर भिवानी में विशाल आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ। जिसमें सैकड़ों बाल्मीकि नवयुवकों को सम्मानित किया गया। सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रहे।
- पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस पर स्मृति यज्ञ एवं प्रेरणा सभा 31 अक्टूबर को महर्षि दयानन्द गौ संवर्धन केंद्र गाजीपुर, दिल्ली में मनाया गया।
- गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद, बिजनौर में 'रजत जयंती समारोह' 29-30-31 अक्टूबर को मनाया गया।
- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित 'ऋषि मेला' महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 138वां बलिदान समारोह के अवसर पर 'ऋषि उद्यान, पुष्कर में' 12-13-14 नवम्बर को मनाया जाएगा। आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

विनम्र श्रद्धांजलि

श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी को मातृशोक : आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी की पूज्य माताजी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संस्थापक महामंत्री एवं पूर्व प्रधान स्व. श्री सरदारी लाल वर्मा जी की धर्म पत्नी श्रीमती आशा वर्मा का 95 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग स्थित शमशान घाट पर आर्यसमाज के सम्वर्धकों द्वारा सम्पन्न कराया गया।

आर्य समाज नोएडा सेक्टर 33 के पूर्व प्रधान श्री सत्य देव आनंद जी का पूना में स्वर्गवास हो गया। आर्य समाज नोएडा की उन्होंने बहुत सेवा की उनके निधन से हम सबको भारी दु:ख है। परमात्मा से प्रार्थना करता हूं दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें उनके परिवार को दुख को सहन करने की शक्ति दें।

सार्वदेशिक सभा के अंतरंग सदस्य वयोवृद्ध आर्य संन्यासी स्वामी सवितानन्द जी महाराज पंचतत्व में विलीन हो गये।

डॉ. धीरज सिंह आर्य प्रतिनिधि सभा उप्र के पूर्व प्रधान का निधन हो गया है। ग्राम-नेकपुर जनपद-बुलन्दशहर में 23 अक्टूबर को अंतिम संस्कार किया गया। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। ऐसे आर्यसमाजी के निधन पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!! **ओ३म् शांति शांति शांति।**

वैदिक मिशनरी पं. सत्यपाल पथिक की श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

आर्य समाज के प्रसिद्ध भनोपदेशक, ऋषि दयानन्द महिमा के गीतों को लिखने वाले ऋषि भक्त पं. सत्यपाल 'पथिक' जी की प्रथम पुण्यतिथि 17 अक्टूबर को जालंधर (पंजाब) में भव्यरूप से मनाई गई। यज्ञ भजन के कार्यक्रम के पश्चात पुस्तकों का विमोचन किया गया। श्रद्धांजलि समारोह के पश्चात अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अनेक विद्वान, भजनोपदेशक, आर्यनेता, आर्यों समाजों के दूर-दूर से पधारे अधिकारियों की उपस्थिति बड़ी संख्या में रही। कार्यक्रम का प्रसारण आर्य संदेश टीवी पर किया गया। आर्य समाज नोएडा की ओर से मंत्राणी श्रीमती गायत्री मीना, श्रीमती राज सरदाना, श्रीमती राज अग्रवाल, वसराजपुरी व गुरुकुल के प्रधानाचार्य आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार ने उपस्थिति दर्ज कराई और पथिक जी को अपनी रचनाओं से भावभीनी श्रद्धांजलि प्रदान की। कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

शुल्क सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।

आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद! कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2019 को समाप्त हो गया है, फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। **अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।**

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'पंजाब नेशनल बैंक', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- PUNB0148320 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

हेल्दी फूड भी हो सकते हैं हानिकारक...

धोखे में न रहें

अक्सर लोग खाने-पीने से पहले फूड हेल्दी है या नहीं इस बात का खूब ख्याल रखते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कुछ फूड ऐसे भी हैं जो हेल्दी होते हुए भी आपके लिए किलर का काम कर सकते हैं। यह जानना जरूरी है कि ऐसे कौन से फूट हैं।

लो फैट फूड : बहुत से लोग सोचते हैं कि अगर वे लो फैट फूड खरीद रहे हैं तो वे हेल्दी रहेंगे। लेकिन आपकी जानकारी के लिए बता दें, लो फैट पैक्ड फूड दरअसल, कई तरह के केमिकल्स से बने होते हैं जिससे इनमें फैट कम होता है। ये केमिकल्स बॉडी के लिए बहुत अनहेल्दी होते हैं।

गाजर : सर्दियों में गाजर खूब खाई जाती है लेकिन क्या आप जानते हैं बहुत ज्यादा गाजर खाने से बीटा-कैरोटीन बॉडी बहुत ज्यादा ऑब्जर्व करती है। बहुत ज्यादा अगर गाजर खाई जाए तो स्किन ओरेंज होने लगती है और ब्लड पर इसका पूरा कन्सनट्रेशन चला जाता है जो कि हार्मफुल हो सकता है।

फ्रूट जूस : लोग सोचते है कि पैक्ड फ्रूट जूस पीने से वे हेल्दी रहेंगे लेकिन ये बॉडी के लिए अच्छे नहीं है। ये ना सिर्फआर्टिफिशियल फ्लेवर से बनते है बल्कि इसमें शुगर और केमिकल्स? भी खूब होते है। जिससे मोटापे बढ़ने के साथ ही बहुत सी हेल्थ प्रॉब्लम्स भी हो सकती हैं। बहुत ज्यादा कॉफी के सेवन से नर्वस सिस्टम डैमेज हो सकता है। इसोम्निया की समस्या, मसल्स क्रैम्प्स और घबराहट जैसी प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। ध्यान रखें कि दिनभर में आप 2 से ज्यादा कप कॉफी ना पीएं।

प्रोसेस्ड मीट : प्रोसेस्ड मीट में मौजूद कैमिकल कोलन कैंसर और कई गंभीर समस्याओं का कारण बन सकता है। ये शुगर से पूरी तरह से पैक होता है. इसमें मौजूद नमक और फैट डायबिटीज और मोटोपे का कारण होते हैं। इससे बेहतर आप खुद से ही मीट बनाकर खाएं।

फिश ऑयल : बहुत ज्यादा ओमेगा 3 फैटी एसिड के सेवन से ब्लड थिन हो जाता है. इससे हेल्थ पर नेगेटिव इफेक्ट पड़ता है। रिसर्च के मुताबिक, बहुत ज्यादा फिश ऑयल के सेवन से विजन प्रॉब्लम, जी मिचलाना और टॉक्सिसिटी की दिक्कत बढ़ जाती है। ये हेल्दी फूड ऐसे में खतरनाक हो जाता है।

फ्रोजन डिनर और लंच : इसमें कोई डाउट नहीं है कि फ्रोचन लंच और डिनर बहुत सुविधाजनक होते है. बेशक ये लो कैलोरी युक्त हो। इनमें सोडियम बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है। ये फूड बहुत ज्यादा प्रोसेस्ड होता है। ऐसे में ये फूड खाकर आपको डायजेस्टिव प्रॉब्लम हो सकती है।

दालचीनी : बहुत ज्यादा दालचीनी के सेवन से कैंसर और लीवर में टॉक्सिसिटी बहुत बढ़ जाती है. रिसर्च के मुताबिक, बॉडी को सिर्फ 2 ग्राम दालचीनी की आवश्यकता होती है। सोडा : रेगुलर सोडा में बहुत अधिक शुगर और कई तरह? के केमिकल्स मिले होते हैं जो कि कैंसर के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। इस सेवन से डायबिटिज भी हो सकती है।

पोटैटो चिप्स : अगर आप पोटैटो चिप्स खाने जा रहे हैं तो एक बार जरूर सोचिए। ये बहुत सारे फैट और कैलोरीज से भरपूर है। लेकिन क्या आप जानते हैं इसमें बहुत सारे केमिकल्स भी मिले हुए हैं। इसमें मौजूद केमिकल्स से कैंसर और मौत तक हो सकती है।

आर्य समाज नोएडा की श्रीमती आदर्श बिश्नोई, प्रधाना महिला समाज का आर्य समाज बड़ा बाजार कोलकता में उद्बोधन।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

।। ओ३म् ।।

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम, नोएडा

का

भव्य वार्षिकोत्सव

दिनांक : 04 व 05 दिसम्बर, दिन : शनिवार-रविवार, दिसम्बर : 2021

स्थान : बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र : 0120, 2505731, 9899349304, 9871798221

निमंत्रण : धर्मानुरागी सज्जनों एवं देवियों! प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्यसमाज नोएडा के प्रांगण में वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यों का विशाल मेला लग रहा है। इस अवसर पर मूर्धन्य विद्वानों, संन्यासियों एवं आर्य नेताओं के विचार एवं भजनोपदेशकों के मधुर भजन श्रवण करने को मिलेंगे। अतएव विनम्र प्रार्थना है कि इस अविस्मरणीय आध्यात्मिक आनन्द के लिए अवश्य पधारें।

: कार्यक्रम :

गायत्री महायज्ञ	:	शनिवार 04 दिसम्बर 2021, प्रातः 08:30 से 9:30 बजे तक वेदपाठी- ब्र. आर्ष गुरुकुल नोएडा
भजन प्रस्तुति	:	भजन- श्री भानुप्रकाश शास्त्री (भजनोपदेशक)
आर्य संस्कृति रक्षा एवं सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन	:	शनिवार 04 दिसम्बर, प्रातः 10 बजे से 12:30 बजे तक
महिला सम्मेलन	:	शनिवार 04 दिसम्बर, दोपहर 02 बजे से 05:00 बजे तक
भजन संध्या	:	शनिवार 04 दिसम्बर, दोपहर 07:30 बजे से 08:30 बजे तक

:मुख्य समारोह :

11 कुण्डीय विश्व शान्ति सौहार्द महायज्ञ	:	रविवार 05 दिसम्बर 2021, प्रातः 08 से 09 बजे तक
वेद सम्मेलन	:	रविवार 05 दिसम्बर 2021, प्रातः 10:00 से 01:30 बजे तक

सम्मान, धन्यवाद, शान्तिपाठ एवं ऋषिभोज

देश के जाने-माने संन्यासी, आर्य विद्वान, आर्य नेता पधार रहे हैं

सविनय निवेदन यथायोग्य सहायता हेतु : आप सहयोग कर सकते हैं- 1. नकद रुपये या चेक देकर। 2. ऋषि लंगर हेतु खाद्य सामग्री एवं घी आदि देकर। 3. यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था कराकर। 4. कार्यक्रम में उपस्थित होकर व पधारे हुए विद्वानों की सेवा करके। 5. प्रतियोगिता के पुरस्कारों को प्रायोजित करके।

आप अपना सहयोग पंजाब नेशनल बैंक सेक्टर-33, नोएडा के खाता संख्या : 1483010100282, IFSC- PUNB01483 में सीधे जमा करा सकते हैं।

विशेष आकर्षण : ब्रह्मचारियों का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रदर्शन
नोट : समयानुसार प्रातः राश एवं ऋषि भोज की उत्तम व्यवस्था

आर्य समाज नोएडा का मासिक मुखपत्र : ''विश्ववारा संस्कृति'' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका के सदस्य बनें।

निवेदक : (संरक्षक : श्री आनन्द चौहान, निदेशक, एमिटी शिक्षण संस्थान, श्रीमती सुकेश तायल, ब्रि. अनिल अदलक्खा, श्री सुधीर सिंघल)

शैलेन जगिया : प्रधान	डॉ. जयेन्द्र कुमार : प्राचार्य	गायत्री मीना : मंत्री	आदर्श बिश्नोई : प्रधाना
आर्य कै. अशोक गुलाटी : उपप्रधान	रविन्द्र सेठ- उपप्रधान	विजेन्द्र कठपालिया : उपमंत्री	शोभा शर्राफ : मंत्राणी
रविशंकर अग्रवाल : पुस्तकालयाध्यक्ष	नरेन्द्र सूद : कोषाध्यक्ष		मधु भसीन : कोषाध्यक्षा

(समस्त अधिकारी, कार्यकारिणी, संरक्षकगण एवं सदस्यगण) आप सपरिवार ईष्ट-मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221